कॉपीराईट-मुक्त शोध-पुस्तिका

# डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म का ब्राह्मणवादी कल्टों में रुपांतरण रोकिये !

मुख्य लेखक / संपादक

**मान. शीतल मरकाम**

## 1) नवयान बौध्द धम्म का संक्षिप्त सार !

डॉ. अम्बेडकर ने अपनी किताब ''बुध्द तथा कार्ल मार्क्स'' में बौध्द धम्म का सार निचे दिये मुताबिक बताया है :- ⊙ स्वतंत्र समाज के लिये धर्म जरुरी है। ⊙ सभी धर्म अपनाने लायक नही होते। ⊙ धर्म का संबंध जीवन की वास्तविकताओं के साथ होना चाहिये न कि ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग, नर्क इ. के बारे में सिधान्त पेश करना या कल्पनाएं करना। ⊙ ईश्वर को धर्म का केन्द्रबिंदू बनाना गलत है। ⊙ आत्मा की मुक्ति को धर्म का केन्द्रबिंदु बनाना गलत है। ⊙ प्राणियों की बली चढाने को धर्म का केन्द्रबिंन्दु बनाना गलत है। ⊙ सच्चा धर्म लोगों के दिलों में होता है न कि शास्त्रों में। ⊙ हर चिज का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। ⊙ कोई भी चीज सनातन या हमेशा के लिये नही होती। हर चिज में बदलाव होता है। अस्तीत्व हमेशा बदलते रहता है। ⊙ कोई भी चीज हमेशा के लिये बंधनकारक नही है। हर चीज की समीक्षा और परीक्षा करनी चाहिये। ⊙ कोई भी बात अंतिम नही होती। ⊙ सभी मानव समान है। ⊙ जन्म नही बल्कि लोगों की उपयोगिता ही उनकी कसौटी होनी चाहिये। ⊙ उच्च आदर्श महत्वपूर्ण है न कि राजसी परिवार में जन्म लेना। ⊙ सभी के प्रति मैत्री की भावना को कभी त्यागना नही चाहिये। यहां तक कि हमें अपने दुश्मन के प्रति भी इस भावना को रखना चाहिये। ⊙ हर किसी को पढाई का हक है। अन्न की तरह ही शिक्षा सबके लिये जरुरी है। ⊙ अच्छे चरित्र के बिना पढाई खतरनाक होती है। ⊙ इन्सान और नैतिकता धर्म का केन्दबिन्दु होना चाहिये। अगर ऐसा नही है तो धर्म एक क्रूर अंधविश्वास होगा। ⊙ नैतिकता को जीवन का आदर्श बना देना ही काफी नही है। क्योंकि ईश्वर का अस्तित्व नही है इसलिये नैतिकता जीवन का अंग होना चाहिये है।

⊙ धर्म का मूल मकसद दुनियां की पूर्नरचना कर उसे सुखी बनाना है न कि दुनियां के आरंभ और अंत का पता लगाना है। ⊙ हितों के बीच होने वाले संघर्षो की वजह से दुनियां में दुख है। इन संघर्षो को हल करने का इकलौता तरिका अष्ठांग मार्ग पर चलना है। ⊙ निजी संपत्ति एक वर्ग को ताकतवर बनाती है जबकि दूसरे वर्ग के लिये दुखों का कारण बनती है। ⊙ इसलिये समाज की भलाई इसमें है कि वह इन दुखों को इनके कारणों को खत्म कर समाप्त करें। ⊙ अगर युध्द सच्चाई और न्याय के लिये नही है तो वह गलत है। ⊙ जीतने वाले के पराजित लोगों के प्रति कर्तव्य होते है।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक बुध्द के धम्म का केन्द्र इन्सान है और इसी धरती

पर इन्सान के इन्सानों के बीच के संबंध है। उनकी दूसरी मान्यता यह थी कि लोग दुनिया में दुखों तकलीफों और गरीबी में रह रहे है। इन दुखों को कैसे दूर किया जाये यही बुध्द के धम्म का उद्देश्य है। इसके अलावा बुध्द का धम्म कुछ नही है। ***The centre of his Dhamma is man and the relation of man to man in his life on earth. His second postulate was that men are living in sorrow, in misery and poverty. The world is full of suffering and that how to remove this suffering from the world is the only purpose of Dhamma. Nothing else is Dhamma. (Vol 11, p. 121)***

## 2) नवयान बौध्द धम्म हिनयान, महायान इ. से भिन्न है।

1) विभिन्न देशों में प्रचलित बौध्द धम्म, मूल बौध्द धम्म से एकदम विपरित बन चुके है। मसलन, तिब्बती तंत्रयान में आत्मा तथा अदृष्य ताकतों को जगाना, दैत्यों, भूतों इ. की पूजा करना, इन्सानों की बली चढाना, तंत्रयान की संभोग साधना करना, तांत्रिक कर्मकांडों में इन्सानी हड्डियों के वाद्य, इन्सानी चमडी से बने ढोल तथा पात्र, इन्सानी खून, इन्सानी कटे लिंग, स्त्री की माहवारी का खून, इन्सानी चर्बी तथा शरीर के विभिन्न हिस्से इ. का उपयोग किया जाता रहा है। चीन, जापान, श्रीलंका, थायलंड इ. सभी देशों में मरने के बाद दूसरा जन्म लेने, भूत प्रेत स्वर्ग-नर्क इ. सभी बातों को मान्यता है। इन देशों में हिन्दू देवि-देवताओं को भी बौध्द धम्म में शामिल किया गया है। जापान इ. देशों में बौध्द धम्म की मान्यता के मुताबिक स्त्रियों को स्वर्ग नही मिलता इसलिये मरने के बाद स्त्रियों का नाम पुरुषों के नाम पर रखा जाता है। उनकी मान्यता है कि ऐसा करने से मृत महिला का जन्म पुरुष के रुप में होगा और उन्हे स्वर्ग मिलेगा।

2) दुनियां में दो तरह के धर्म है। पहले प्रकार के वे धर्म है जो शोषकों व्दारा जनता का दमन शोषण करने में सहायक मानसिकता, प्रथा, परंपराएं और विश्वास पैदा कर शोषण-व्यवस्थाओं की हिफाजत करने का काम करते है। इन धर्मो में ब्राह्मण धर्म, झाओनिस्ट यहुदी धर्म और पूजारियों का ईसाई धर्म शामिल है। दूसरे प्रकार के धर्मो में शोषण विरोधी धर्मो का समावेश होता है जो समानता, बंधुत्व और न्याय पर आधारित लोकतांत्रिक शोषण विहीन समाज कायम करना चाहते है। ऐसे धर्मो में बौध्द धम्म, इस्लाम तथा बहुजन संतों के धर्म-पंथों का समावेश होता है।

3) विभिन्न देशों के ब्राह्मणीकृत बौध्द पंथ तथा विदेशी कल्ट भारत भर में फैलकर बौध्द धम्म के नाम पर तंत्रयानी शक्तिवाद तथा ब्राह्मण-धर्म के अंधविश्वासों को बौध्द धर्म के नाम पर फैला रहे है। भिख्खुओं को सिर्फ जरुरी आठ वस्तुएं और पेट भरने के लिये सिर्फ एक वक्त के भोजन का नियम है। इस नियम को इन पंथों तथा कल्टो ने पूरी तरह से बदल दिया है और डॉ. अम्बेडकर की अनुयायी जनता से दान वसूलकर दलित समाज के बल पर फल-फुल रहे है। आर.एस.एस. की योजना के तहत सवर्ण बौध्द भिख्खुओं के माध्यम से न सिर्फ दलितों में ब्राह्मण धर्म की तमाम संकल्पनाओं को फैलाया जा रहा है बल्कि दलित समाज से बडे पैमाने पर दान वसूलकर आर.एस.एस. को मालामाल बनाया जा रहा है। इसे तभी रोका जा सकता है जब हम सिर्फ और सिर्फ डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म के भिख्खु को ही भोजन दान करे। रुपये पैसे इ.

का दान समाज की संबंधित कामों की कमिटीयों को ही करें। डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द भिख्खुओं की सही सही पहचान आगे के अध्यायों में बताई गई है।

**4**) भारत के दलितों में बौध्द धम्म को प्रचारित-प्रसारित करने का काम सिर्फ डॉ. अम्बेडकर ने किया है। श्रीलंका के अनागरिक धम्मपाल इ. सवर्णो का बौध्द धम्म चंद सवर्णो तक ही सीमित रहा है। बुध्द की दफनाई गई मूल शिक्षा को आधुनिक परिपेक्ष में सिर्फ डॉ. अम्बेडकर ने ही उजागर किया है। इसलिये वे आधुनिक युग के बौध्द धम्म के रचयिता है। डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों ने डॉ. अम्बेडकर ने बताये हुए बौध्द धम्म को अपनाया है। डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों का मूलभूत आदर्श डॉ. अम्बेडकर की शिक्षा तथा उनका दिया हुआ आधुनिक युग का वैज्ञानिक बौध्द धम्म है। इस विश्वास के कारण ब्राह्मणवादी हितशत्रुओं को घुसपैठ कर नवयान / भीमयान बौध्द धम्म को विकृत करने का कोई अवसर नही मिलता अगर वे डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म को पूरी प्रज्ञा, तर्क से जान समझ लें।

**5**) जो लोग इस बात से इन्कार करते है कि डॉ. अम्बेडकर आधुनिक युग के वैज्ञानिक बौध्द धम्म के रचयिता नही है वे या तो ब्राह्मणवादी है या फिर ब्राह्मणवादियों के एजन्ट है। ऐसे लोगों को डॉ. अम्बेडकर के बौध्द धम्म में घुसपैठिये मानकर उसी मुताबिक उनसे बर्ताव करना चाहिये।

**6**) डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट कर दिया था कि उनका बौध्द धम्म हिनयान और महायान इ. पंथों से अलग है। उनके बौध्द धम्म को नवयान कहा जा सकता है। डॉ. अम्बेडकर को इस बात पर कोई ऐतराज नही था कि अगर उसे भीमयान कहा जाये। इसलिये डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी उन तमाम बौध्द पंथों तथा उनके रुपों को पूरी तरह से नकारते है जो ब्राह्मणों तथा उनके एजन्टों व्दारा विकृत किये गए है। डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी डॉ. अम्बेडकर ने लिखी हुई ''द बुध्दा एन्ड हिज धम्मा'' किताब को मूल बौध्द धम्म की सच्ची शिक्षा देने वाला मूलभुत ग्रंथ मानते है, जिसे सही रुप में समझने के लिये डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक **1**) 'रिवोल्युशन एन्ड काउंटर रिवोल्युशन इन एनसिएंट इंडिया' तथा **2**) 'बुध्द और कार्ल मार्क्स' इन किताबों को पढना जरुरी है।

'द बुध्दा एन्ड हिज धम्मा' में डॉ. अम्बेडकर को कई बाते ब्राह्मणों व्दारा लिखे धम्म ग्रंथों से उदघृत करनी पडी जिनमें कई अंधविश्वास की बातें है। उदाहरण : - अ) गंधार नाम का एक देश था। वहां एक भीखारी रहता था जिसे घृणास्पद बीमारी थी जिससे उसके आस पास का माहौल बदबूदार हो जाता था। पानी तथा दिगर जरुरी वस्तुओं के साथ बुध्द अपने **500** शिष्यों के साथ वहां पहुंचे। उन्होने भीखारी के शरीर को अपने हाथों से अच्छी तरह से धोकर साफ किया तथा उसके जख्मों पर दवा लगाई। तभी धरती हिलने लगी और जगह अलौकिक प्रकाश से जगमगा उठा। स्वर्ग के देवताओं ने प्रकट होकर बुध्द के प्रति अपार आदर का भाव प्रकट किया। ***(Vol .11, p.296-297***) ब) बुध्द ने यह जानने के लिये कि उन्हे ज्ञान प्राप्त होगा या नही सुजाता की नौकरानी ने दिये बर्तन को नदी में फेंककर कहा कि अगर मुझे ज्ञान प्राप्त होना है तो यह बर्तन डुबेगा नही। तीन बार बर्तन डूबा नही बल्कि बहाव की

विपरित दीशा में बहने लगा। *(Vol .11, p.73)* क) बुध्द ने बाकी की तीन दिशाओं में साधना करने के बाद आखिर में पूर्व दीशा का चयन किया क्योंकि इस दीशा का चयन तमाम साधुओं ने अपनी दृष्ट भावनाओं को दूर करने हेतु किया था। *(Vol .11, p.73)* इसी तरह बुध्द के जन्म-पुर्नजन्म, बोधीसत्वों के पुर्नजन्म को लेकर भी कुछ अंधविश्वासपूर्ण बातें है।

हमें यह अच्छी तरह से जान-समझ लेना है कि वे मात्र उदघृत किये उदाहरण है न कि डॉ. अम्बेडकर के कथन। इसलिये ऐसे अंधविश्वास वाले उध्दहरणों को उन पाली इ. ग्रंथों में ब्राह्मणों व्दारा घुसाई हुई बातें मानकर तर्कपुर्वक नजरंदाज कर देना चाहिये। डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक बुध्द के समय में लिखने की कला का विकास नही हुआ था। इसलिये भिख्खुओं को बुध्द की बातें याद करनी होती थी जो सभी भिख्खुओं के लिये मुमकिन नही था। सभी भिख्खु बुध्द की कही हर बात को याद नही रखते थे। ऐसे में धार्मिक बातों को सुनकर याद रखने का व्यवसाय करने वाले लोग निर्माण हुए थे जिन्हे ''भानक'' कहा जाता था। अक्सर यह देखा गया कि बुध्द की बातों को गलत ढंग से प्रस्तुत किया जाता था। ऐसी बातें खुद बुध्द के सामने भी लाई गई। इसके कुछ उदाहरण अलगड्डूपमा सुत्ता, महा-कम्मा-विभंगा सुत्ता, कन्नकथ्थाला सुत्ता, तथा जीवका सुत्ता में है। इसके अलावा भी ऐसे प्रचुर उदाहरण है। कर्म तथा पुर्नजन्म को लेकर गलत बयानी किया जाना आम बात थी क्योंकि यह संकल्पनाएं ब्राह्मण धर्म में भी थी। इसलिये भानकों ने ब्राह्मण धर्म की मान्यताएं बौध्द धम्म में शामिल कर दी। इसलिये बौध्द धम्म ग्रंथों में लिखी बातें बुध्द का कथन है या नही इसके प्रति हमने बहुत ज्यादा सतर्क रहना चाहिये। इसे जानने समझने के लिये कई कसौटियां है। अन्य बातों को ध्यान में रखते हुए जो भी बात तर्कसंगत है वह बात बुध्द का कथन हो सकती है। उसी तरह बुध्द को ऐसी किसी भी बहस में शामिल होने से ऐतराज था जो लोगों के हितों से संबंधित नही होती थी। इसलिये ऐसी कोई भी बात बुध्द का कथन नही हो सकती जिसका संबंध लोगों के हितों से नही है। बुध्द जिन बातों को लेकर पूरी तरह से निश्चित थे उनके बारे में उन्होने अपने मत स्पष्ट रुप से व्यक्त किये है। जिन बातों के बारे में निश्चित नही थे उन बातों के बारे में उन्होने सिर्फ अपना संभावित मत व्यक्त किया है। **(Vol. 11, p. 350-351)** इसलिये ऐसी संकल्पनाएं जो हमारे बीच ब्राह्मणवादी भ्रमों को फैलाती है तथा जिनकी कोई सामाजिक उपयोगिता नही है उन संकल्पनाओं को डॉ. अम्बेडकर की मूलभुत शिक्षा की रोशनी में नकार देना चाहिये।

डॉ. अम्बेडकर ने **15** अक्तुबर **1956** को अपने भाषण में कहा कि मै किताबें लिखकर आपके मन की सारी शंकाओं को दूर कर दूंगा और आपको पूरा ज्ञान देने की कोशिश करुंगा। फिलहाल आप मुझ पर भरोसा रखे। (*Vol. 17 Part III P. 544*) लेकिन कुछ ही समय में उनकी मौत हो जाने की वजह से ऐसा न हो सका।

## 3) नवयान बौध्द धम्म समझने के लिये क्या पढे ?

**1**) डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक उनकी किताब '' द बुध्दा एन्ड हीज धम्मा'' में बताये हुए बौध्द धम्म को सही रुप में समझने के लिये उन्ही की लिखी हुई किताबें

**1**) रिवोल्युशन एन्ड काउंटररिवोल्युशन इन एनसिएंट इंडिया (**Revolution and Counter revolution in ancient India**) तथा **2**) बुध्द और कार्ल मार्क्स (**Buddha and Karl Marx**) को जानना समझना जरुरी है। (***I may mention that this is one of the three books which will form a group for the proper understanding of Buddhism. The other two books are 1) Buddha and Karl Marx and 2) Revolution and Counter Revolution in ancient India. (Vol. 17 Part Two p. 158)***) ध्यान रहे कि उपरोक्त उध्दहरण में डॉ. अम्बेडकर ने दि. **15** मार्च **1956** को अपने हस्ताक्षर सहीत पॅरॅग्राफ में स्पष्ट रुप से अपनी किताब का शीर्षक 'बुध्दा एन्ड कार्ल मार्क्स' कहा है न कि 'बुध्द या कार्ल मार्क्स'।

**2**) रिवोल्युशन एन्ड काउंटर रिवोल्युशन इन एनसिएन्ट इंडिया नामक किताब में यह उजागर किया गया है कि ब्राह्मण धर्म-संस्कृति मुक्त यौनाचार में, खुले में सबके सामने यौनाचार करने में, मां, बहन, बहु, बेटी, चाची इ. निकट संबंधों में यौनाचार करने, जानवरों के साथ यौनाचार करने, अपनी बहु, बेटी, बिवी इ. को पैसे की एवज में बेचने या उन्हे लैंगिक उपभोग के लिये किराये से देने में, जुँआ खेलने में, शराब पीने में, जादुई तांत्रिक क्रियाओं तथा कर्मकांडों में, पाप-पुण्य, आत्मा, मौत के बाद दोबारा जन्म लेने में तथा हैवानियत शैतानियत भरी चातुवर्ण्य की व्यवस्था में विश्वास करते थे। बुध्द ने अनैतिक ब्राह्मणवादी धर्म संकृति के खिलाफ इन्केलाब किया और लोगों को ब्राह्मणवादी अंधविश्वासों से, ब्राह्मणवादी अनैतिकता से मुक्त किया। इस तरह बुध्द का इन्केलाब सामाजिक-सांस्कृतिक इन्केलाब था। भीमयान बौध्द धम्म हमें इस बात की शिक्षा देता है कि हम ऐसी तमाम धर्म संस्कृतियों के खिलाफ सांस्कृतिक सामाजिक इन्केलाब छेड दे जो धर्म संस्कृति अज्ञान, अंधविश्वास, इ. फैलाकर तार्किक सोच की हत्या कर लोगों पर दिमागी गुलामी लाद देती है।

**3**) प्राचीन भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति किताब से हमें यह भी पता चलता है कि बुध्द ने ब्राह्मणवादी सामाजिक बर्बरता और दमन शोषण से बौध्द धम्म ने विषमता पर आधारित ब्राह्मण-धर्म की चातुवर्ण्य की सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ एक इंकेलाब छेडा था। इस इंकेलाब का मकसद समानता, न्याय और बंधुत्व पर आधारित लोकतांत्रिक शोषण विहीन समाज व्यवस्था को कायम करना था। इसतरह बौध्द धम्म एक राजनीतिक इन्केलाब भी था। यही वजह है कि बुध्द ने ''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'' का नारा दिया। बुध्द ने 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' कभी नही कहा क्योंकि वे अच्छी तरह से जानते समझते थे कि ब्राह्मण बदतर शोषक और दमनकर्ता वर्ग है।

**4**) अपनी किताब प्राचीन भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति में डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट किया है कि **1**) राज्य के समर्थन के बिना तथा सामाजिक सुरक्षा यंत्रणा के अभाव में बाह्य तथा आंतरिक दुश्मनों व्दारा बौध्द भिख्खुओं का कत्लेआम किया गया, **2**) क्योंकि सामान्य बौध्द जनता बौध्द दर्शन में प्रशिक्षित नही थी इसलिये वह बौध्द भिख्खुओं की कमी को पूरा नही कर सकी। **3**) बौध्द जनता ब्राह्मणों के जुल्मों से बचने के लिये इस्लाम, इसाई धर्म, सिख धर्म इ. में धर्मांतर करने पर मजबुर हुई और इस तरह भारत से बौध्द धम्म का विनाश हो गया।

**5**) इससे हमें यह सबक मिलता है कि अ) या तो बौध्दों को अपनी रक्षा करने

के लिये राज्य की पूरी विश्वसनीय मदद चाहिये या फिर उनकी खुद की सामाजिक संरक्षण यंत्रणा होनी चाहिये। ब) धम्म को सही अर्थो में कायम रखने के लिये जरुरी तादाद में बौध्द धम्म में दक्ष भिख्खुओं तथा आम लोगों की फौज होनी चाहिये जो बुध्द की सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनीतिक क्रांति के लिये पूरी तरह से समर्पित है।

**6**) इसी कमी को पूरा करने के लिये डॉ. अम्बेडकर ने बौध्द धम्म की दीक्षा लेने के फौरन बाद घोषित कर दिया कि हर दीक्षित बौध्द को दूसरे लोगों को दीक्षा देने का अधिकार है। ऐसा इतिहास में पहली बार हुआ था। डॉ. अम्बेडकर आम बौध्दों और भिख्खुओं को समान स्तर पर अंशकालीन तथा पूर्णकालीन धम्म प्रचारकों के रुप में मानते थे। वे उन्हे समान स्तर पर इसलिये मानते थे क्योंकि दोनों की अपनी अपनी खुबियां और कमजोरियां है। भिख्खुओं की खासियत यह है कि वे परिवार की जिम्मेदारियों से मुक्त होते है इसलिये बुध्द की सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक क्रांति के लिये निस्वार्थ सैनिक हो सकते है। उनकी कमजोरी यह है कि बिना जरुरी सामाजिक नियंत्रण के वे समाज पर पूजारीतंत्र को लाद सकते है और बुध्द के तर्क पर आधारित धम्म को कर्मकांडों वाले ब्राह्मण धर्म में तब्दिल कर सकते है। इसलिये डॉ. अम्बेडकर ने अपने अनुयायियों को पूजारियों के परजीवी वर्ग के खतरे के प्रति सतत रुप से आगाह किया है। पूजारी वर्ग के बारे में डॉ. अम्बेडकर कहते है - कि यह परजीवी जमात लोगों के खून-पसीने की कमाई पर जीवित रहती है और समाज के आधार को ही खोखला बनाती है उसे किसी भी सुरत में बिना जरुरी नियंत्रण के काम करने की इजाजत नही देनी चाहिये। हम भारतीयों ने इंग्लिश सुधार आन्दोलन से सबक लेते हुए धर्म और पूजारी दोनों पर ही उचित नियंत्रण कायम करना चाहिये और उन्हे मनमर्जी से बढने की इजाजत नही देनी चाहिये। ***.... this parasite living upon and eating into the vitals of Society can no longer be permitted to function without check or control. We in India might take a leaf out of the English reformation and bring both the religion and the priest under proper control and prevent its rank and wild growth.*** (***Vol. 17 Part Two p. 3***) डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक पूजा और प्रार्थना से पूजारी वर्ग का निर्माण होता है और पूजारी वर्ग एक ऐसा शैतानी दिमाग है जिसने हर तरह के अंधविश्वासों को जन्म देकर सम्मा दीत्ती यानी व्यक्ति की तार्किक सोच को ध्वस्त कर दिया है। **".... the efficacy of worship and prayer gave rise to the office of the priest and the priest was the evil genius who created all superstition and thereby destroyed the growth of Samma Ditthi. (Vol. 11, p. 254-255)** यही वजह है कि डॉ. अम्बेडकर भिख्खुओं पर सामाजिक नियंत्रण चाहते थे। इसलिये वे भिख्खु संघ के उद्देश्यों में तथा स्वरुप में आधुनिक जरुरतों के मुताबिक जरुरी बदलाव करना चाहते थे।

डॉ. अम्बेडकर ने 'द बुध्दिस्ट सोसायटी ऑफ इंडिया' नामक संस्था को **4** मई **1955** को पंजीकृत किया। सोसायटी के उद्देयों में **6** वे उद्देश्य में कहा गया है कि तमाम धर्मो के तुलनात्मक अध्ययन को बढावा दिया जाएगा। **To promote comparative study of all religions** तथा **8** वा उद्देश्य यह है कि जरुरी हुआ तो बौध्द भिख्खुओं की नई जमात तैयार की जाएगी। **To create a new order of priests, if it**

**becomes necessary to do so. (Vol 17-II, p. 479)** इसका मतलब यह है कि डॉ. अम्बेडकर को भिख्खुओं के चरीत्र के प्रति शंका थी इसलिये उन्होने उन्हे 'पूजारी' यानी **priest** इस तरह से संबोधित किया है। डॉ. अम्बेडकर अपने अनुयायियों को सभी धर्मो का तुलनात्मक अध्ययन कराना चाहते थे ताकि बौध्द धम्म को दर्शन, व्यवहार और आचरण में इस्लाम जैसे मानवतावादी धर्म से भी बेहतर साबित किया जा सके।

आज के युग में धम्मप्रचार का ऐसा कोई काम नही है जो सिर्फ अविवाहित भिख्खु ही कर सकते है आम गृहस्थ नही। आज धम्म की बातों की किताबें तथा वीडिओ उपलब्ध है जो बुध्द के समय नही थी। तेज संचार माध्यमों की उपलब्धता की वजह से आज धम्मप्रचार भिख्खुओं का मोहताज नही है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि भारत में बौध्द धम्म के प्रचार प्रसार का काम भिख्खुओं ने नही बल्कि जागरुक गृहस्थ लोगों ने किया है। यही वजह है कि डॉ. अम्बेडकर ने आम लोगों को भिख्खुओं इतना ही महत्व देते हुए धम्म दीक्षा के बाद घोषित किया था कि हर दीक्षित बौध्द को दूसरों को दीक्षा देने का हक है। इसके बावजूद ब्राह्मणवादियों के दलाल बुध्दिजीवी तथा दलाल बौध्द भिख्खु यह झूठा प्रचार कर रहे है कि गृहस्थ चाहे जितना जागरुक और धम्म का जानकार क्यों ना हो वह भिख्खुओं से कमतर है क्योंकि भिख्खुओं ने घर बार छोड दिया है। इस थोथी दलील से लोगों पर वे पूजारियों की सत्ता को लादना चाहते है। आज भिख्खु पक्के बने विहारों में रहते है। वे तमाम सुखसुविधाओं का उपभोग कर रहे है जो बहुतांश अवाम को उपलब्ध ही नही है। वे धन भी संग्रहित कर रहे है जो नियमों का सरासर उल्लंघन है। ज्यादातर भिख्खु पंडों की प्रतिकृति बन कर समाज को नियंत्रित करना चाहते है। इसे रोका जाना चाहिये तभी डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म का ब्राह्मणवादी कल्टों में रुपांतरण होने से रोका जा सकेगा।

7) नवयान बौध्द धम्म के भिख्खुओं तथा अनुयायियों के काम :-

**a**) नवयान बौध्द धम्म के हर भिख्खु के लिये यह अनिवार्य है कि वह डॉ. अम्बेडकर ने दी हुई **22** प्रतिज्ञाओं पर अमल करने के लिये लोगों के बीच जागरुकता का कार्य करें।

**b**) नवयान बौध्द धम्म के सभी भिख्खुओं के लिये तथा अनुयायियों के लिये यह अनिवार्य है कि वे एक-दूसरे का ''जय-भीम'' घोष वाक्य से अभिवादन करें। जो भिख्खु ऐसा नही करता उसे ब्राह्मणवादी बौध्द पंथों का भिख्खु करार देकर उसी के मुताबिक उससे बर्ताव किया जाना चाहिये।

**c**) बौध्द संघ में भिख्खुओं तथा डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म के अनुयायियों को समावेश होता है। भिख्खु संघ की बौध्द अनुयायियों पर धम्म के मामले में कोई सत्ता नही होगी बल्कि धम्म के सभी मामलों का निर्धारण स्थानीय बौध्द संघ करेगा न कि अकेला भिख्खु संघ।

**d**) धम्म लोगों व्दारा, लोगों के लिये लोगों का धम्म है जिसे उन्हे जान-समझकर अमल में लाना है। बुध्द ने किसी पर भी कोई बात थोंपी नही फिर चाहे वह लोगों के लिये कितनी भी अच्छी क्यों ना हो। **The Buddhas way was not to force people to**

**do what they did not like to do although it was good for them. (Buddha and Karl Marx)**

**e**) नवयान बौध्द अनुयायियों को यह अधिकार है कि वे नवयान बौध्द धम्म के भिख्खुओं को सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनीतिक इन्केलाब की बुध्द और अम्बेडकर की शिक्षा पर अमल करने के लिये दबाव डाले क्योंकि भिख्खु अनुयायियों की खून-पसीने की कमाई पर ही जीवनयापन करते है। जो भिख्खु ऐसा करने से इन्कार करते है उन्हे भोजन दान नही दिया जाना चाहिये।

**f**) भिख्खु धन अर्जित नही कर सकता। उसे सिर्फ भोजन की तथा आठ चिजों को रखने की अनुमति है इसलिये भिख्खु को इन चिजों के अलावा अन्य किसी चिज का जैसे कि रुपये पैसे या अन्य वस्तु का दान कतई न करें। ऐसा करने से पूजारी वर्ग का निर्माण होता है। इसके अलावा धम्म प्रचार के कामों में जो भी खर्चा करने की जरुरत है जैसे कि प्रवास का खर्चा इ. को संबंधित कमिटी के सदस्य या संबंधित बौध्द अनुयायी उस काम का खर्चा खुद करेंगे, भिख्खु को पैसे इ. नही दिये जाएंगे। किसी कारणवश पैसे दिये जाते है तो भिख्खु के लिये यह अनिवार्य होगा कि वह उसका हिसाब संबंधित कमिटी को या संबंधित लोगों को दें।

**g**) सिर्फ उसी भिख्खु को भोजनदान देना चाहिये जिसे आप निजी तौर से जानते है कि वह भिख्खु भीमयान बौध्द धम्म के कामों को पूरी इमानदारी से कर रहा है। जिस भिख्खु को आप नही जानते उसे कतई भोजन दान न दें।

**h**) धम्म के दिगर कामों के लिये डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों ने अपना दान प्रत्यक्ष रुप से उस काम के लिये बनी लोगों की कमिटियों को ही देना चाहिये न कि भिख्खुओं को वर्ना उनका रुपांतरण पूजारियों में होते देर नही लगेगी। कमिटी होने से प्राप्त दान का हिसाब किताब सुनिश्चित होता है। जबकि ब्राह्मणीकृत बौध्द पंथों के भिख्खुओं को दिये दान का भिख्खुओं व्दारा कोई हिसाब नही दिया जाता।

**i**) लोगों को अपने क्षेत्र के भिख्खु के पूर्व इतिहास की संपूर्ण जानकारी होनी चाहिये ताकि इसे सुनिश्चित किया जा सके कि वह घुसपैठिया ब्राह्मणवादी नही है।

**j**) डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों को गलती करने वाले भिख्खु को सजा देने का अधिकार है क्योंकि भिख्खु प्रत्यक्ष रुप से समाज के लिये जिम्मेदार है। लोग ही भिख्खु के अभिभावक है।

**k**) भिख्खु पर भिख्खुओं से संबंधित मामलों में ही भिख्खु संघ का अधिकार होगा।

**l**) नवयान बौध्द धम्म के भिख्खु से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सामान्य लोगों की तरह के वस्त्र पहने। उसके ऐसा करने से उसके लिबास की वजह से नही बल्कि उसके काम और ज्ञान की वजह से उसे योग्य सम्मान हासिल होगा और उसके प्रति किसी भी प्रकार का जैसे कि वह ज्ञानी है, पूज्यनीय है इ. अंधविश्वास पैदा नही होगा। लोग उसके साथ समान स्तर पर बर्ताव कर सकेंगे। इससे लोगों के बीच समानता, बंधुत्व और न्याय की भावना विकसित होगी। इसलिये चीवरधारी भिख्खु की अपेक्षा आम वस्त्र धारण करने वाले भिख्खु को अधिक महत्व दिया जाना चाहिये। हमें

इस बात को कतई नही भूलना चाहिये कि चीवर सिर्फ एक 'युनिफार्म; यानि गणवेश मात्र है। इससे ज्यादा उसका महत्व नही है।

**m**) श्रम से अपनी रोटी नही कमाने की वजह से भिख्खु को श्रम के महत्व का अहसास होता भी है या नही यह एक मुख्य सवाल है। उसके भिख्खुपन को पवित्रता इ. से जब जोड दिया जाता है तो न सिर्फ लोगों की खून-पसीने की कमाई पर जीने की मानसिकता का उसमें विकास होता है बल्कि वह यह समझता है कि ऐसा कर के वह उनपर अहसान कर रहा है।

**n**) भिख्खु के चरणों के आगे हमने अपने माथे को कदापि नही झुकाना चाहिये। भिख्खु के आगे सिर झुकाना माँ-बाप के आगे सीर झुकाने जैसा नही है। इसका मतलब सिर्फ एक चीवरधारी पंडे के आगे सिर झुकाना है। ऐसा करना समानता की भावना के बिल्कुल खिलाफ है तथा अंधविश्वासों को बढाना है। जो भी भिख्खु लोगों को अपने आगे सिर झुकाने को कहता है वह भिख्खु नही बल्कि ब्राह्मणवादी पंडा है।

**o**) किसी भी भिख्खु को ''वंदामी भंते'' इ. तरह से जिसका मतलब समर्पण है संबोधित नही किया जाना चाहिये। ऐसे संबोधन की अपेक्षा करने वाला व्यक्ति नवयान बौध्द धम्म का भिख्खु नही बल्कि ब्राह्मणवादी पंडा है। ''वंदामी भंते'' इ. संबोधन करने वाला व्यक्ति पूजारीवाद को बढावा देता है।

**p**) भिख्खुओं से समान स्तर पर आदरसहित बातचित करनी चाहिये। उनपर श्रध्दा नही रखनी चाहिये। उनका सम्मान उनके कामों की वजह से किया जाना चाहिये न कि उनके चीवर की वजह से।

**8**) खुद में प्रज्ञा, शील करुणा का विकास करने और अष्ठांग मार्ग पर चलने के लिये खुद को खुद ही प्रशिक्षित करना होता है। इसमें किसी गुरु या भिख्खु की कोई भुमिका नही है। आसक्ति और अज्ञान के संबंध में तमाम जानकारी किताबों, संवाद गोष्ठीयों इ. के जरिये उपलब्ध होती रहती है। इन्हे जान समझ कर खुद की भावनाओं पर जरुरी नियंत्रण कायम करने के लिये व्यक्ति को खुद ही कोशिश करनी होती है। यही वजह है कि डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि मुझे यह कल्पना पसंद है कि भिख्खुओं तथा गैरभिख्खुओं के संयुक्त तर्कपूर्ण चर्चासत्र आयोजित किये जाये जहां उन्हे बौध्द धम्म की मूलभूत शिक्षाओं से अवगत कराया जाये और उन्हे अलग अलग भाषाएं सीखाकर जगह जगह भेजा जाये। ***I like the idea of opening a sort of the logical seminar where Bhikkus and non-Bhikkhus could be tought the fundamentals of Buddhism and make to learn the different languages of India so that they could be sent to different parts. (Vol. 17 Part One P. 446)***

डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी अपने मश्तिष्क को भिख्खुओं के नियंत्रण से बाहर रखकर ही वे भिख्खुओं को पूजारियों की परजीवी जमात बनने से रोक सकते है। नवयान बौध्द धम्म में गुरु-शिष्य परंपरा या भिख्खुओं पर निर्भरता लादने की कोशिशें प्रतिक्रांतिकारी है क्योंकि वह व्यक्ति के तार्किक सोच के विकास को अवरुध्द करती है। ऐसी कोशिशें ब्राह्मणवादियों के एजन्ट ही कर सकते है।

**9**) बच्चों को उनके भविष्य के व्यवसायिक जीवन के लिये जरुरी ज्ञान हासिल

कराना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये। धम्म शिक्षा के नाम पर बच्चों को कभी भी भिख्खुओं या अन्य व्यक्तियों के हवाले नही करना चाहिये। इतनी कम आयु में वे यह तय नही कर सकते कि उनके लिये क्या अच्छा और क्या बुरा है। उनका इस्तेमाल यौन - शोषण तथा मश्तिष्क नियंत्रण इ. में होने की संभावना होती है। ऐसे मामले बहुतायत में उपलब्ध है जहां बच्चों को पूजारियों के हवाले किया गया है। अवयस्क श्रामणेरों के यौन शोषण के प्रचुर मामलें है। बच्चों को श्रामणेर बनाना उनके मानवाधिकारों का हनन है। हमें ब्राह्मणवादियों के दलाल भिख्खुओं से सावधान रहना चाहिये जो धम्म संस्कार डालने के नामपर छोटे बच्चों को श्रामणेर बनाने को कहते है।

डॉ. अम्बेडकर को विवाहित युवा भिख्खुओं की कल्पना पसंद थी जो भिख्खु पति-पत्नि पूरी तरह से धम्म के लिये समर्पित हो और अन्य तमाम भिख्खुओं संबंधी नियमों का पालन करते हो। *(*Vol. 17 Part One P. 447*)*

## 4) समाज सेवा संबंधी बौध्द धम्म की शिक्षा !

**1**) ब्राह्मण भिख्खुओं व्दारा बौध्द धम्म में घुसाए गए कथित आर्य सत्य समाज सेवा के प्रबल विरोधी है क्योंकि उनके अनुसार व्यक्ति के दुखों का कारण उन्होने किये हुए पूर्वजन्म के पाप है। एक विदेशी सैलानी ने जब कुछ लोगों को बहुत बूरी अवस्था में देखा और लोगों से पूछा कि वे उनकी मदद क्यों नही करते तो हिन्दूओं ने जवाब दिया कि उनकी हालत उनके पूर्व जन्म के पापों की वजह से है। अगर उन्हे हम मदद कर भी दें तो अगले जन्म में उन्हे और ज्यादा तकलीफों का सामना करना पडेगा इसलिये उन्हे इसी जन्म में अपने पिछले जन्म के पापों का फल भोग लेने दो।

**2**) डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक हमारी चौथी समस्या भिख्खुओं से संबंधित है। भिख्खुओं का निर्माण करने में बुध्द का उद्देश्य क्या था ? क्या वे एक परिपूर्ण व्यक्ति का निर्माण करना चाहते थे ? या फिर उनका मकसद एक सामाजिक सेवक का निर्माण करना था जो मित्र, मार्गदर्शक तथा चिंतक बन कर समाज की सेवा में जुटा रहता है। यह सचमुच महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्योंकि इस प्रश्न पर बौध्द धम्म का भविष्य निर्भर करता है। अगर भिख्खु सिर्फ एक परिपूर्ण इन्सान है तो बौध्द धम्म के प्रचार-प्रसार के लिये उसकी कोई उपयोगिता नही है क्योंकि भले ही वह एक परिपूर्ण व्यक्ति है लेकिन वह स्वार्थी है। अगर वह अपना जीवन सामाजिक सेवा में बिताता है तो वह बौध्द धम्म के लिये कुछ आशा बन सकता है। इस मसले को न सिर्फ बौध्द धम्म की शिक्षा की निरंतरता को कायम रखने के लिये बल्कि बौध्द धम्म के भविष्य के लिये भी इसे हल करना जरुरी है। ***The fourth problem relates to the Bhikkhu. What was the object of the Buddha in creating the Bhikkhu ? Was the object to create a perfect man ? Or was his object to create a social servant devoting his life to service of the people and being their friend, guide and philosopher? This is a very real question. On it depends the future of Buddhism. If the Bhikkhu is only a perfect man he is of no use to the propagation of Buddhism because though a perfect man he is a selfish man. If, on the other hand, he is a social servant he may prove to be the hope of Buddhism. This question must be decided not so much in the interest***

***of doctrinal consistency but in the interest of the future of Buddhism. (Vol. 11, Introduction)***

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक भिख्खु अगर लोगों के दुखों और शोषण के प्रति अलिप्त रहता है तो वह चाहे जितना परिपूर्ण और सुसंस्कृत क्यों ना हो वह भिख्खु नही है। वह चाहे कुछ भी हो सकता है लेकिन वह भिख्खु नही हो सकता। ***"A Bikkhu who is indifferent to the woes of mankind, however perfect in self-culture, is not at all a Bhikkhu. He may be something else but he is not a Bhikku. "(Vol. 11 P. 435)*** डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि भिख्खु संघ को अपना नजरिया बदलना पडेगा और अलिप्तता की बजाय इसाई मिशनरियों की तरह उन्हे सामाजिक सेवक और प्रचारक बनना पडेगा। ***I am afraid the Sangh will have to modify its outlook and instead of becoming recluses they should become like the Christian missionaries the*** **social workers and social preachers.** ***(Vol. 17 Part One P. 446)*** भिख्खु संघ को बनाते वक्त बुध्द के दिमाग में और भी कुछ मकसद थे। उनमें से एक मकसद यह है कि वे समाज को सच्ची और निपक्ष सलाह और मार्गदर्शन दे सके। यही वजह थी कि उन्होने भिख्खुओं को संपत्ति इकट्ठा करने से प्रतिबंधित किया। .... बुध्द का दूसरा मकसद यह था कि भिख्खु संघ समाज की सेवा के लिये स्वतंत्र रहेगा। ***But there were other purposes which He had in mind when He thought of founding the Sangha. One such purpose was to create a body of intellectuals to give the laymen true and impatial guidance. That is the reason why He prohibited the Bhikkhus from owning property. ..... The other purpose of Buddha in founding the Bhikkhu Sangha was to create a society the members of which would be free to do*** **service to the people.** ***(Vol. 17 Part Two p. 106-07)***

नवयान बौध्द भिख्खुओं तथा डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों से यह उम्मीद की जाती है कि वे अपने बौध्द विहारों में :-

अ) कम खर्चे वाले सामुहिक विवाहों का आयोजन करें। ब) गरीब बच्चों को पढाई की किताबों तथा दिगर मदद मुहैया कराएं। क) बच्चों, महिलाओं, युवकों तथा वयस्कों के लिये कम अवधी के विभिन्न कौशल्य संपादन के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करें। ड) गरीब मरीजों को मुफ्त दवा इ. उपलब्ध करें। सामाजिक विचारों के डॉक्टरों को गरीब बस्तियों में सप्ताह में एक बार भेंट देने के लिये प्रेरित करना चाहिये। इ) युवकों ने विहार के प्रांगण में विभिन्न शारिरिक प्रशिक्षण के कार्यक्रम चलाने चाहिये, इन प्रशिक्षणों में भिख्खुओं ने भी शामिल होना चाहिये। फ) विहारों में एक मार्गदर्शन केन्द्र हो जहां रोजमर्रा के मामलों में जैसे कि विभिन्न सरकारी दफ्तरों में कामों की प्रक्रिया, स्कूलों कॉलेजों में प्रवेश इ. की अर्जीयों का स्वरुप, इ. जानकारी उपलब्ध की जाती है। इससे संबंधित आवश्यक पठन सामग्री विहारों में रखी जाये। ग) नवयान बौध्द धम्म का भिख्खु क्योंकि एक समाज सेवक भी है इसलिये उन्होने गरीब बेसहारा मरीजों की सेवा भी करनी चाहिये। बुध्द ने एक भीखारी जिसे कोई दुर्धर रोग था, उसके जख्मों से गंदी बदबू फैल रही थी को नहला धुला कर उसके शरीर को दवा इ. लगाई थी। भिख्खुओं ने ऐसा करने पर यह साबित हो जाएगा कि उनमें सचमुच करुणा का विकास हुआ है। बौध्द अनुयायियों ने ऐसे मामलों को बौध्द भिख्खुओं के ध्यान में लाने चाहिये

ताकि भिख्खुओं को मरीजों की सेवा कर करुणा का सुख हासिल होता रहेगा। ह) गायन, नृत्य, नाटक, कवि-स्पर्धा, चित्रकला स्पर्धा इ. का आयोजन किया जाना चाहिये ताकि लोगों को अपने व्यक्तित्व के विकास में मदद मिल सके।

**5**) बुध्द की सामाजिक-सांस्कृतिक शिक्षा !

जो ब्राह्मणवादी अंधविश्वासों तथा अज्ञान से मुक्त है बुध्द और डॉ. अम्बेडकर की सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई करने योग्य है। इस क्रांति का मकसद लोगों को मानसिक तौर पर गुलाम बनाने वाले, सामाजिक तथा आर्थिक रुप से कमजोर करने वाले ब्राह्मणवादी अंधविश्वासों तथा आत्मघाति प्रथा-परंपराओं के खिलाफ संघर्ष छेड देना है। इसके लिये जरुरी है कि डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म का भिख्खु तथा डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी ब्राह्मण-धर्म के सभी अंधविश्वासों से मुक्त हो और खुद में जरुरी हद तक जागरुकता को विकसित करें।

**1**) बुध्द ने कहा है कि ईश्वर पर आधारित धर्म कल्पना पर आधारित धर्म है। ऐसा धर्म सिर्फ अंधविश्वास ही पैदा करता है। ***The Buddha said that the religion based on God is based on speculation. It only ends in creating superstition. (Vol. 11 P. 251)*** बुध्द आम इन्सान थे ईश्वर नही थे। डॉ. अम्बेडकर इसे भली भाँती जानते समझते थे कि पाली ग्रंथों में भगवान शब्द का अर्थ अपनी तृष्णा पर नियंत्रण करने वाला होता है। इसके बावजूद डॉ. अम्बेडकर ने अपनी किताब '' द बुध्दा एन्ड हिज धम्मा'' में जानबुझकर 'भगवान' शब्द का इस्तेमाल नही किया क्योंकि वे अपने अनुयायियों को भगवान शब्द से जुडे आत्मा, पुर्नजन्म इ. ब्राह्मणवादी अंधविश्वासों से मुक्त रखना चाहते थे। बुध्द के लिये ''तथागत'' शब्द का इस्तेमाल करें। बुध्द के लिये भगवान शब्द जोडने का मतलब ब्राह्मणवादी अंधविश्वासों को प्रचारित प्रसारित करना है।

**2**) बुध्द के मुताबिक आत्मा में विश्वास करना ईश्वर में विश्वास करने से भी ज्यादा खतरनाक है। क्योंकि आत्मा में विश्वास करने से न सिर्फ पूजारी वर्ग की निर्मिती होती है, न सिर्फ वह सारे अंधविश्वासों की जड है बल्कि आत्मा में विश्वास लोगों को जन्म से मृत्यु तक पूजारियों के संपुर्ण नियंत्रण में कर देता है। ..... बुध्द ने महाली को स्पष्ट शब्दों में बताया कि आत्मा जैसी कोई चीज अस्तित्व में नही होती। यही वजह है कि बुध्द की शिक्षा को अनात्ता यानि आत्मारहित शिक्षा कहा गया है। ***Indeed in his opinion the belief in the existence of a soul is far more dangerous than the belief in God. For not only does it create a priesthood, not only it is the origin of all superstition but it gives the priesthood complete control over man from bith to death. .....to Mahali he did tell in most positive terms that there is no such thing as soul. That is why his theory of the soul is called Anatta, i.e. , non-soul. (Vol. 11 P. 261-262)*** मरने के बाद व्यक्ति के शरीर से आत्मा, चेतना या चुंबकीय क्षेत्र का निर्माण होना ब्राह्मणवादी अंधविश्वास के ही रुप है। ऐसा प्रचार करने वाले लोग अथवा भिख्खु ब्राह्मणवादी या उनके दलाल है। इन दलालों से उसी तरह का बर्ताव करें जैसा बर्ताव ब्राह्मणवादियों के दलाल से किया जाना चाहिये। डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी सिर्फ अनुवांशिकता में भरोसा रखते है, आत्मा, चेतना या चुंबकीय क्षेत्र में नही।

**3**) डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों का विश्वास मरने के बाद के जीवन में नही है। बोधिसत्व मरने के बाद कई जन्म लेते है यह विश्वास ब्राह्मण-धर्म का विश्वास है

जिसे बुध्द की शिक्षा में जानबुझकर घुसाया गया है। इसलिये डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी 'बोधिसत्व' शब्द का इस्तेमाल न करें। क्योंकि इसके इस्तेमाल से ब्राह्मण धर्म की सभी अंधविश्वासी संकल्पनाएं भी पीछे पीछे चली आती है। आत्मा का कोई अस्तित्व नही है इसलिये मरने के बाद जींदगी का या पाप-पुण्य या प्रवृत्तियों के रुप में हमारे कामों का अगले जन्मों में स्थानांतरण होने जैसी कल्पनाएं ब्राह्मण धर्म के अंधविश्वास मात्र है। जो भी व्यक्ति या भिख्खु इन बातों को प्रचारित प्रसारित करता है वह ब्राह्मणवादी या उनका दलाल है। ऐसे लोगों से उसी तरिके से व्यवहार करना चाहिये जो ब्राह्मण ावादियों के साथ या उनके दलालों के साथ किया जाता है।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक बुध्द ने अलौकिक ताकतों को नकारने के पीछे तीन मकसद थे। पहला यह कि वे लोगों को तर्क के रास्ते पर लाना चाहते थे। उनका दूसरा मकसद वे लोगों को सच की खोज में स्वतंत्र रखना चाहते थे। उनका तीसरा मकसद वे अंधविश्वासों के उगमसथल को ही हटा देना चाहते थे जो लोगों की खोजी प्रवृत्ति की हत्या कर देता है। .... बुध्द का धम्म तर्कवाद को प्रचारित करता है, अगर तर्कवाद को हटा दिया जाता है तो बौध्द धम्म में कुछ नही बचेगा। ***In repudiating supernaturalism the Buddha had three objects. His first object was to lead man to the path of rationalism. His second object was to free man to go in search of truth. His third object was to remove the most potent source of superstition, the result of which is to kill the spirit of inquiry. ..... It preaches rationalism and Buddhism is nothing if not rationalism. (Vol. 11 P. 250)***

**4**) डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म के भिख्खु या अनुयायी ईश्वर, आत्मा, पाप-पुण्य इ. में विश्वास नही करते इसलिये उन्हे किसी भी प्रकार के कोई कर्मकांड नही करने होते। डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक भिख्खु पाप में, ईश्वर तथा आत्मा में विश्वास नही करता इसलिये उसे कोई कर्मकांड अंजाम देने नही होते। इसलिये वह पूजारी नही है। ***A Bhikkhu does not believe in original sin, in God and Soul. There are, therefore, no ceremonies to be performed. He is, therefore, not a priest. ( Vol 11, P. 432)*** डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी उपासक नही है क्योंकि वे किसी की भी उपासना यानि पूजा नही करते। इसलिये हमने 'उपासक' शब्द की बजाय अनुयायी इस शब्द का इस्तेमाल करना चाहिये। उपासक, श्रध्दा इ. शब्दों के इस्तेमाल से पूजारीवर्ग और ब्राह्मणवाद मजबूत होता है। उपासकों या पूजा करने वालों का बुध्द या डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा से कोई संबंध नही होता। वे सिर्फ **14** अप्रैल और बुध्द पुर्णीमा को चंद प्रथा परंपराओं को अंजाम देने के सिवा कुछ नही करते। वे वंदना त्रिशरण पंचशील इ. रटने का काम मात्र करते है। जबकि अनुयायी उस जीवन मिशन के लिये समर्पित होते है जिस के लिये बुध्द तथा डॉ. अम्बेडकर ने अपना जीवन समर्पित कर दिया था।

हम उपासक नही है इसलिये हमें भिख्खु इ. के प्रति श्रध्दा नही रखनी है क्योंकि श्रध्दा ही अंधश्रध्दा होती है। हमें डॉ. अम्बेडकर और बुध्द के प्रति उनकी शिक्षा और त्याग की वजह से असीम आदर है।

अ) अगर कोई भिख्खु परित्राण पाठ, गृहशांति इ. कर्मकांडों को करता है तो वह भिख्खु नही बल्कि ब्राह्मण पंडा है।

ब) जो गृहस्थ परित्राण पाठ, गृहशांति इ. कर्मकांडों का आयोजन करता है वह ब्राह्मण-धर्म के अंधविश्वासों से ग्रस्त है तथा ब्राह्मणवादी अंधविश्वासों को बढा रहा है।

क) ब्राह्मणवादी भिख्खु को किसी भी किस्म का दान नही देना चाहिये और न ही उनसे कोई संबंध रखना चाहिये।

**5**) बुध्द की सांस्कृतिक क्रांति को अंजाम देने के लिये :-

**1**) बौध्द विहारों में लोगों के लिये डॉ. अम्बेडकर, फुले इ. समाज क्रांतिकारियों का आवश्यक साहित्य उपलब्ध होना चाहिये।

**2**) बौध्द विहार के भीतर एक भाग पढाई के लिये सुरखित रहना चाहिये।

**3**) विहारों में निश्चित समय पर चर्चा करने, जागरुकता वीडिओ दिखाने, इ. के लिये समय निश्चित होना चाहिये।

**4**) विहारों में धम्म के विभिन्न विषयों पर बोलने का काम सर्वसामान्य गृहस्थों ने करना चाहिये जिसके बाद उसपर खुली चर्चा होनी चाहिये। भिख्खुओं के गलत मतों की आलोचना करनी चाहिये। भिख्खुओं की आलोचना होने के बाद ही स्पष्ट होगा कि वे कितने विनयशील बन पाये है। डॉ. अम्बेडकर ने ''बुध्द और उनका धम्म'' किताब में गृहणी विदेशिका और उसकी नौकरानी डार्की की कहानी बताई है :- विदेशिका की ख्याती थी कि वह अत्यंत नम्र स्वभाव की है। डार्की उसकी परीक्षा लेने जानबुझकर एक घंटा देर से सोकर उठी। विदेशिका ने गुस्से से पूछा कि वह देर से क्यों उठी है। दूसरे दिन वह दो घंटे देर से उठी इसपर विदेशिका ने बहुत ज्यादा गुसा जताया। तीसरे दिन डार्कि और देर से उठी तो विदेशिका अपने गुस्से पर काबू नही कर सकी और उसने बैलगाडी के चक्के को बाहर निकलने से रोकने वाली लोहे की पीन उसके सीर पर दे मारी जिससे उसके सिर से खून बहने लगा। डार्कि चिल्लाते हुए लोगों को बताने लगी कि जिसे आप विनम्र कहते है उसने उसके साथ कैसा बर्ताव किया है। तब से लोगों ने उसे विनम्र समझना छोड दिया। डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक लोग तबतक ही विनम्र नजर आते है जबतक उनके मन के खिलाफ कोई बात नही होती। जैसे ही उनके मन के खिलाफ कोई बात होती है तो उनके स्वभाव की परीक्षा हो जाती है। बौध्द भिख्खुओं ने अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करना कितना सीखा है इसे जांचने का मौका तभी मिलेगा जब उनकी गलत बात की हम स्पष्ट रुप से आलोचना करेंगे।

**5**) विहार में बुध्द वंदना इ. को भिख्खु ने नही बल्कि सामान्य गृहस्थ ने अंजाम देना चाहिये। वंदना के वक्त लाउड-स्पीकर का इस्तेमाल नही करना चाहिये क्योंकि इससे पढाई करने वाले बच्चों की पढाई में व्यवधान पैदा होता है।

**6**) सभी सामाजिक समारोह जैसे शादी, नामकरण संस्कार, मृत्यु इ. को अंजाम देने का काम भिख्खुओं ने नही बल्कि गृहस्थ ने करना चाहिये।

**7**) भिख्खुओं का काम गैरबौध्दों को बौध्द धम्म समझाकर उन्हे बौध्द बनाना है। उनका काम ब्राह्मणवादी परित्राण पाठ, तीसरा दिन. इ. ब्राह्मणवादी कर्मकांडों के खिलाफ लोगों को जागरुक करने का है। इन कामों को वे डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों की मदद से पूरा कर सकते है।

**8**) भिख्खुओं को डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों की मदद से ब्राह्मण-धर्म के होली, दिवाली इ. त्योहार दलितों व्दारा मनाये जाने के मद्देनजर उन्हे ऐसा न करने का तथा अन्य सामाजिक कुप्रथाओं को छोड देने के लिये जागरुकता मुहिम तथा सामुहिक संकल्प दिलाने की मुहिम चलानी चाहिये।

**9**) भिख्खु तथा जागरुक अनुयायियों ने इस बात का निरिक्षण करना चाहिये कि इन त्योहारों तथा कुप्रथाओं को कौन दलित मना रहे है। उन्हे इन कुप्रथाओं को त्याग देने के लिये जागरुक करना चाहिये।

**10**) भिख्खुओं ने सामाजिक जागरुकता साहित्य की लोगों के बीच बिक्री कर लोगों को जागरुक करना चाहिये।

**11**) नवयान बौध्द धम्म के सभी भिख्खुओं ने डॉ. अम्बेडकर की लिखी किताब अ) प्राचीन भारत में क्रांति तथा प्रतिक्रांति, ब) बुध्द और कार्ल मार्क्स, तथा क) बुध्द और उनका धम्म इन किताबों को अच्छी तरह से आत्मसात कर लेना चाहिये। इन ग्रंथों पर विहार में लोगों के बीच मुक्त रुप से चर्चाएं होनी चाहिये।

**12**) बौध्द विहार बस्ती के सभी सामाजिक मसलों पर विचार विमर्श के स्थल भी होने चाहिये।

## 6) बुध्द का राजनीतिक क्रांति का संदेश !

**1**) बुध्द की शिक्षा के तीन महत्वपूर्ण अंग है :- **1**) अष्ठांग मार्ग पर चलने के लिये खुद को प्रशिक्षित करना **2**) समाज-उपयोगी कामों को अंजाम देना **3**) बुध्द की सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक इनकेलाब को आज के युग की जरुरतों के मुताबिक अंजाम देना।

**2**) डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक कार्ल मार्क्स के निम्नलिखित चार सिधान्त आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है जिन्हे बौध्द धम्म अपनी मान्यता प्रदान करता है :- **i**) दर्शन का कार्य दुनियां का पूर्ननिर्माण होना चाहिये न कि दुनियां की उत्पत्ति की खोज में अपना समय व्यर्थ गंवाना। इस मुद्दे पर बुध्द और मार्क्स के बीच पूरी सहमति है। **ii**) वर्गो के बीच अपने हितसंबंधों को लेकर संघर्ष विद्यमान है। इस मुद्दे के समर्थन में कोसल के राजा और बुध्द के बीच हुआ संवाद है। अष्ठांग मार्ग का सिधान्त वर्ग संघर्ष के अस्तित्व को मान्य करता है और उसे दुखों का कारण भी मानता है। **iii**) निजी संपत्ति एक वर्ग को ताकतवर बनाती है जबकि दूसरे वर्ग को शोषण के जरिये दुखी बनाती है। बुध्द और पोटथापद (**Potthapada**) के बीच हुए संवाद की भले ही भाषा अलग हो लेकिन उसका अर्थ यही है। अगर हम दुखों को शोषण पढे तो बुध्द और मार्क्स के बीच की दूरी बहुत कम हो जाती है। **iv**) समाज की भलाई के लिये जरुरी है कि संपत्ति की निजी मिल्कियत को खत्म कर समाज के दुखों को दूर किया जाये। निजी संपत्ति को लेकर बुध्द और आनंद के बीच का संवाद महत्वपूर्ण है। भिख्खु संघ की सामुहिक संपत्ति इसका जीता जागता उदाहरण है। नियमों के मुताबिक भिख्खु सिर्फ आठ वस्तुओं को अपनी मिल्कियत बना सकता है। संपत्ति को लेकर भिख्खु संघ

के नियम कम्युनिस्ट रशिया के नियमों से ज्यादा कठोर है। (**Buddha or Karl Marx**)

**3**) डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक बुध्द और मार्क्स के उपरोक्त सिधान्तों पर एकमत है। लेकिन इन उद्देश्यों को हासिल करने के साधनों को लेकर उनके बीच समानताएं और भेद नीचे दिये मुताबिक है। बुध्द के मुताबिक दुख के कारणों को दो भागों में रखा जा सकता है। पहले प्रकार के दुख व्यक्ति के त्रृटीपूर्ण बर्ताव की वजह से होते है। इन दुखों को दूर करने का उपाय पंचशील के सिधान्तों पर चलना है। दूसरे प्रकार के दुखों में उन दुखों का समावेश होता है जो इन्सानों के बीच कायम की गई असमानता की वजह से होते है। इस असमानता को दूर करने का मार्ग अष्ठांग मार्ग है। बुध्द चाहते थे कि लोग अपनी आसक्तियों, अज्ञान इ. को दूर कर अष्ठांग मार्ग पर चलकर जीवन में सच्ची खुशी हासिल करें। (**Buddha or Karl Marx**)

बुध्द और मार्क्स के उद्देश्य समान है लेकिन तरिकों में फर्क है। आगे चलकर कौनसे तरिके सही साबित होंगे इसे समझने के लिये दोनों पक्षों के बीच पाई जाने वाली गलतफहमियों को समझना चाहिये। कम्युनिस्टों व्दारा अमल में लाये जाने वाले तरिकें स्पष्ट और फौरी है। ये तरिकें है - **1**) सशस्त्र हिंसा तथा **2**) सर्वहारा वर्ग की तानाशाही। डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक कुछ लोग हिंसा के विचार से ही कंपकपाने लगते है। यह उनकी भावना मात्र है। हिंसा को पूरी तरह से त्यागा नही जा सकता। गैर कम्युनिस्ट देशों में भी हिंसा का उपयोग किया जाता है। गैर कम्युनिस्ट देशों में हत्यारे को फांसी दी जाती है। फांसी पर चढाना क्या हिंसा नही है ? गैर कम्युनिस्ट देश एक दूसरे से युध्द करते है। इसमें लाखों लोगों की मौत होती है। क्या यह हिंसा नही है ? अगर किसी हत्यारे को फांसी दी जा सकती है क्योंकि उसने किसी नागरिक की हत्या की है, अगर किसी सैनिक की युध्द में हत्या की जा सकती है क्योंकि वह दुश्मन देश का सैनिक है तब निजी संपत्ति धारक की हत्या क्यों नही की जा सकती है अगर उसकी निजी संपत्ति की वजह से बाकी की मानवता को दुखों का सामना करना पडता है ? इस नियम का अपवाद निजी संपत्ति धारक को बनाने का कोई कारण नही है। निजी संपत्ति को इतना पवित्र क्यों समझना चाहिये। बुध्द हिंसा के विरोधी थे। लेकिन वे न्याय के समर्थक भी थे। जब भी न्याय के लिये ताकत का इस्तेमाल जरुरी हो तो उन्होने इसकी इजाजत दी है। यह बात बुध्द और वैशाली के सिंह सेनापति के बीच हुए वार्तालाप से स्पष्ट है। बुध्द ने कहा कि उसने बुध्द की शिक्षा को गलत रुप से धारण किया है। दोषी व्यक्ति को सजा देनी और निर्दोष को मुक्त करना जरुरी है। यह न्यायाधीश का दोष नही है अगर वह दोषी को सजा सुनाता है। दोषी को सजा सुनाने का कारण उसका दोषी होना है। सजा सुनाने वाला न्यायाधीश सिर्फ न्याय देने के कर्तव्य को पूरा कर रहा है। इसलिये अहिंसा भंग करने का वह दोषी नही है। जो न्याय और सुरक्षा के लिये लड रहा है उसे अहिंसा भंग करने का दोषी करार नही दिया जा सकता। शांति कायम करने के सभी रास्ते नाकाम हो जाते है तब हिंसा की जिम्मेदारी उस पर आयद होती है जो युध्द शुरु करता है। हमने दुष्ट ताकतों के आगे कभी आत्मसमर्पण नही करना चाहिये चाहे फिर हमें युध्द ही क्यों ना करना पडे। लेकिन युध्द निजी स्वार्थो के लिये नही होना चाहिये। बुध्द ने शायद इस बात को माना होता कि अंतिम परिणाम ही हमारे साधनों के औचित्य को साबित करते है। इसके अलावा और क्या

हो सकता है ? बुध्द ने जरुर ही निजी संपत्ति धारक को हिंसा से मुक्त नही किया होता अगर उसके खिलाफ हिंसा करना ही इकलौता रास्ता बचा हो। (**Buddha or Karl Marx**)

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक बुध्द की अहिंसा जैन धर्म के महावीर की पूर्ण अहिंसा नही है। कम्युनिस्ट हिंसा को पूर्ण सिधान्त मानते है जिसका बुध्द विरोध करते है। जैन ध र्म की अहिंसा और मार्क्स की हिंसा दो अतिरेक है। बुध्द ने हिंसा को एक ताकत के तौर पर अपनाने की इजाजत दी होती। बुध्द शोषितों को सबसे पहले अहिंसात्मक मार्गो को अपनाने की शिक्षा देते है। इसका मतलब यह कतई नही है कि बुध्द इन्ही अहिंसात्मक उपायों पर निर्भर रहने की शोषितों को शिक्षा देते है। बल्कि सशस्त्र संघर्ष में सक्षम बनने की तथा सभी अहिंसक रास्तों के नाकाम हो जाने पर समाज के दुखों को दूर करने के लिये जवाब में हिंसा या सशस्त्र इन्केलाब करने की बुध्द इजाजत देते है। हिंसा से अच्छा उद्देश्य हासिल करते वक्त कई अच्छे उद्देश्यों के ध्वस्त होने की संभावना होती है। इसलिये हिंसा का इस्तेमाल करते वक्त सावधानी बरतनी चाहिये कि दुष्ट ताकतों को नष्ट करते वक्त सही उद्देश्यों को कम से कम ध्वस्त किया जाये। (**Buddha or Karl Marx**)

**4**) बुध्द को तानाशाही मंजूर नही है। बुध्द हमेशा से लोकतांत्रिक रहे और एक लोकतांत्रिक के रुप में उनकी मौत हुई। उन्हे दो बार कहा गया कि वे अपना कोई उत्तराधि ाकारी नियुक्त करें जो भिख्खु संघ को नियंत्रित कर सके। लेकिन बुध्द ने हर बार यही जवाब दिया कि धम्म ही भिख्खु संघ का सर्वोच्च नियंत्रक है। उन्होने न ही तानाशाह होना कबुल किया और न ही किसी तानाशाह को नियुक्त करना मंजूर किया। हमें ताकत के बल पर चलने वाली सरकार और नैतिक गुणों पर चलने वाली सरकार के बीच चुनना होगा। बुध्द ने कोई बात लोगों पर जबरन नही थोंपी है भले ही वह बात लोगों के लिये कितनी ही अच्छी क्यों ना हो। उनका तरिका लोगों की सोच में बदलाव करना था ताकि वे उन बातों को खुद स्वीकार करें। बुध्द ने सदाचार पर आधारित शासन और ताकत के बल पर चलने वाले शासन के बीच के फर्क को उदाहरणों से समझाया है। बुध्द यह चाहते थे कि हर व्यक्ति खुद को सदाचार पूर्ण जीवन जीने के लिये इस कदर प्रशिक्षित कर ले कि वह सदाचार पर आधारित राज्य का सजग प्रहरी बन जाये। कम्युनिस्ट इस बात को मंजूर करते है कि सर्वहारा वर्ग की तानाशाही का सिधान्त उनके राजनीतिक दर्शन की कमजोरी है। वे इस कमजोरी से बचने यह दलील देते है कि कालांतर में शासन यंत्रणा अपने आप खत्म होती चली जाएगी। यहां उन्हे दो सवालों का जवाब देना होगा। पहला यह कि यह तानाशाही की शासन यंत्रणा कब खत्म होगी ? इसके जवाब में वे कोई निश्चित समय सीमा नही बता पाते। लोकतंत्र को सुरक्षित करने के लिये बहुत कम अवधी की तानाशाही शायद अच्छी और लाभकारी हो सकती है। अपने इस काम को खत्म करते ही उसने क्यों खत्म नही हो जाना चाहिये ? क्या सम्राट अशोक ने कलिंग देश के खिलाफ हिंसा करने के बाद हिंसा को त्यागने का उदाहरण पेश नही किया है ? इस हिंसा के बाद अशोक ने हिंसा को हमेशा के लिये त्याग दिया था। कम्युनिस्टों ने इसका कोई जवाब नही दिया है। शासन यंत्रणा खुद ब खुद कब खत्म होगी इससे भी महत्वपूर्ण यह सवाल है कि इस यंत्रणा के खत्म होने के बाद कौनसी व्यवस्था कायम होगी ? क्या उसके बाद

अराजकता की अवस्था पैदा होगी ? अगर ऐसा होता है तो कम्युनिस्ट राज्य का निर्माण एक उपयोगहीन प्रयास होगा। अगर कम्युनिस्ट अपनी राज्य व्यवस्था को तानाशाही से ही बरकरार रख सकते है और इस राज्य यंत्रणा के खुद ब खुद खत्म होते ही अराजकता की अवस्था पैदा होती है तो कम्युनिस्ट राज्य किस माईने में अच्छा है ? अगर शासन यंत्रणा के खुद ब खुद खत्म होने के बाद अगर कोई चीज राज्य व्यवस्था को बांधे रख सकती है तो वह {सदाचार पर आधारित} धर्म है। लेकिन कम्युनिस्टों को धर्म से परहेज है। धर्म के प्रति उनके मन में व्याप्त नफरत की भावना इतनी गहरी है कि वे फर्क ही नही कर सकते कि कौनसे धर्म साम्यवाद के लिये मददगार धर्म है और कौनसे धर्म मददगार नही है। कम्युनिस्टों ने इसाई धर्म के प्रति अपने मन की नफरत को इसाई धर्म और बुध्दिजम के बीच के फर्क को जांचे समझे बिना ही बुध्दिजम पर लागू कर दिया है। इसाई धर्म लोगों को स्वर्ग की कल्पनाएं दिखाकर गरीबी में पीडित रहने की शिक्षा देता है। लेकिन यह आरोप बुध्दिजम पर नही लगाया जा सकता। ध र्म लोगों के लिये अफीम की गोली है यह आरोप भी बुध्दिजम पर नही लगाया जा सकता। बुध्दिजम परलोक की खातीर गरीबी में रहने की शिक्षा नही देता बल्कि वह जरुरी धन अर्जित करने की सीख देता है। (**Buddha or Karl Marx**)

डॉ. अम्बेडकर सतत ध्यान दिलाते है कि कानून समाज के सभी लोगों का समावेश नही करता क्योंकि कानून कुछ कानून तोडने वाले चंद लोगों को ध्यान में रखकर बनाया गया होता है। जबकि व्यापक नैतिकता पर आधारित धम्म संपुर्ण समाज के व्यवहार को बंधुत्व, न्याय, समानता और स्वतंत्रता की दीशा में नियंत्रित करता है। किसी भी समाज-व्यवस्था में धम्म के बिना या तो सामाजिक अराजकता की या तानाशाही की हालत पैदा होती है। आप चाहे कितने भी अच्छे कानून क्यों ना बना दे लेकिन अगर समाज व्दारा ही उन कानूनों का विरोध किया जाता है तो उन कानूनों से कोई फायदा नही होता। अमेरिका में काले लोगों तथा भारत में दलितों की सुरक्षा में बनाये गये कानूनों का इन्हे क्या फायदा हुआ है ? इसलिये डॉ. अम्बेडकर धम्म पर आधारित समाज-व्यवस्था कायम करने के हिमायती थे। डॉ. अम्बेडकर का नवयान बौध्द धम्म समानता, बंधुत्व, न्याय और स्वतंत्रता के मुल्यों पर आधारित शोषणविहीन समाज व्यवस्था को कायम करना चाहता है।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक यह दावा कि रुस की कम्युनिस्ट तानाशाही ने आश्चर्यजनक उपलब्धियां हासिल की है से कतई इन्कार नही किया जा सकता। यही वजह है कि मै कहता हुं कि रुस की तानाशाही सभी पीछडे देशों के लिये अच्छी होगी। लेकिन यह बात कम्युनिस्ट तानाशाही का समर्थन कैसे कर सकती है ? मानवता को सिर्फ आर्थिक मुल्यों की ही नही बल्कि आध्यात्मिक मुल्यों को कायम रखने की भी जरुरत होती है। कम्युनिस्टों की तानाशाही ने इस बात की और न ही ध्यान दिया है और न ही देना चाहती है। फ्रांस की क्रांति जिस समाज की बुनियाद कायम करना चाहती थी उन्हे बंधुत्व, स्वातंत्र्य और समानता इन तीन शब्दों में बताया जा सकता है। उनके इन्ही नारों की वजह से फ्रांस की क्रांति को स्वीकार किया गया था। वह समानता

लाने में नाकाम रही। हम रुसी क्रांति का स्वागत इसलिये करते है क्योंकि वह समानता कायम करना चाहती है। लेकिन समाज समानता को लाने के लिये अपने बंधुत्व और स्वतंत्रता को खोना नही चाहते। बंधुत्व और स्वतंत्रता के बिना समानता का कोई मुल्य नही होगा। समानता, बंधुत्व और स्वतंत्रता तीनों सिर्फ बुध्द के रास्ते में ही उपलब्ध है। कम्युनिज्म सिर्फ एक को दे सकता है तीनों को नही। (**Buddha or Karl Marx**)

डॉ. अम्बेडकर ने संविधान निर्माण करते वक्त ही स्पष्ट कर दिया था कि चाहे जितना अच्छा संविधान क्यों न बनाया जाये उसे लागु करने वालों की नियत ठिक नही है तो लोगों को उसका कुछ भी फायदा नही मिलेगा। अगर संविधान कितना भी खराब क्यों ना हो अगर उसे लागु करने वालों की नियत ठिक है तो वे ऐसे खराब संविधान से भी बेहतर परिणाम मिल सकते है। (**Vol. 18-III, p.165**)

यही वजह थी कि उन्होने कहा था कि अगर यह संविधान लोगों की उम्मीदों को पूरा नही करता है तो उसे जलाने वाले वे खुद होंगे। इसी बात के मद्देनजर हमें इस बात को समझना होगा कि क्यों डॉ. अम्बेडकर ने खुद को सच्चा कम्युनिस्ट तक कहा लेकिन भारत में कम्युनिस्ट शासन का विरोध किया ? इसकी वजह यही थी कि भारत में कथित कम्युनिस्ट शासन आने के बावजूद राजसत्ता ब्राह्मणों के हाथों में ही केन्द्रित रहती और ब्राह्मण बहुजनों को कभी न्याय नही दे सकते थे। इसलिये साम्यवादी व्यवस्था में भी बहुजनों की हालत में कोई सुधार नही होता।

**4**) झाओनिस्ट ब्राह्मणवादी शोषक वर्ग के दलाल दलित जो ''बाबासाहब'' नाम का सतत उच्चारण करते है लेकिन असल में गोयनका, नशेडी ओशो रजनीश तथा समलैंगिक नकली भिख्खु संघरक्षित को अपना ''माई-बाप'' मानते है और अपने लेखों तथा किताबों में उन्हे बुध्द पुरुष तक कहते है वे जान-बूझकर इसे नकारते है कि बुध्द और मार्क्स के उद्देश्य एक है, बुध्द को शोषण-व्यवस्था को खत्म कर समानता, बंधुत्व, न्याय और स्वतंत्रता पर आधारित समाज को कायम करने सशस्त्र क्रांति से भी कोई ऐतराज नही है। वे मक्कारी से छुपाते है कि बुध्द और मार्क्स के बीच का मुख्य फर्क सिर्फ इतना है कि बुध्द **1**) तानाशाही का विरोध करते है और जनतांत्रिक समाज व्यवस्था चाहते है तथा **2**) बुध्द चाहते है कि ऐसे समाज की बुनियाद नैतिकता, सदाचार, समानता, न्याय, बंधुत्व और स्वतंत्रता का पुरस्कार करने वाले धर्म पर न कि सिर्फ कानूनों पर खडी की जाये।

**7**) सांस्कृतिक-सामाजिक और राजनीतिक इन्केलाब
के काम नवयान बौध्द धम्म के भिख्खुओं की खास पहचान है।

**1**) निर्वाण प्राप्त करना सभी बौध्दों का व्यक्तिगत अंतिम ध्येय है जिसका मतलब खुद को उच्चतम स्तर तक विकसित करना है। भारत में तात्कालीन जरुरतों के मुताबिक बौध्द धम्म का पहला लक्ष सामाजिक - सांस्कृतिक और राजनीतिक इन्केलाब करना होना चाहिये क्योंकि बौध्द धम्म लोगों की तकलीफों को दूर करने को प्राथमिकता देता है। इसलिये भिख्खुओं की समीक्षा उनके सांस्कृतिक-सामाजिक तथा राजनीतिक इन्केलाब के

कामों के आधार पर की जानी चाहिये न कि इस बात पर कि उन्होने खुद का कितना नैतिक विकास किया है। डॉ. अम्बेडकर ने कहा है कि भिख्खु अगर जनता की तकलीफों से अलिप्त रहता है, वह चरित्र-निर्माण में चाहे जितना परिपूर्ण क्यों ना हो वह भिख्खु कतई नही है। वह चाहे कुछ भी हो सकता है लेकिन भिख्खु कतई नही हो सकता। **"A Bikkhu who is indifferent to the woes of mankind, however perfect in self-culture, is not at all a Bhikkhu. He may be something else but he is not a Bhikku." (Vol. 11 P. 435)** ऐसा भिख्खु खुद के चरित्र-निर्माण के लिये अवाम के खून-पसीने की कमाई पर पलता है और अवाम के दुख-दर्द से अलिप्त रहता है तो वह परजीवी से कम नही है। बौध्द अवाम पर भिख्खुओं की श्रेष्ठता को थोंपने का मतलब पूजारियों की सत्ता थोंपने का ब्राह्मणवादी काम है।

डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म के भिख्खु की हिनयान, महायान, तंत्रयान इ. ब्राह्मणवादी पंथों से अलग पहचान उनके सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक इन्केलाब के कामों से ही हो सकती है। इसलिये सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक इन्केलाब के काम भिख्खुओं के पहचान की कसौटी होगी कि वह डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म का भिख्खु है या नही।

**2**) डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म में व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करने हेतु उसके मन के तमाम ब्राह्मणवादी अंधविश्वासों को तथा सभी तरह के अज्ञान को दूर करना, तथा अपने उन भावनाओं, अपेक्षाओं, लालसाओं पर योग्य नियंत्रण कायम जरुरी है जो परस्पर संबंधों में बिगाड पैदा कर दुखों का निर्माण करते है।

बुध्द के मुताबिक इन्सान अपनी लालसाओं का शिकार बन जाता है इसलिये दुखी होता है। लालसाएं व अज्ञान निर्वाण हासिल करने के रास्ते की रुकावटें है। जैसे ही इन भावनाओं पर उचित नियंत्रण कायम कर लेता है वह निर्वाण प्राप्त करना सीख जाता है। बुध्द के मुताबिक यह लालसाएं या आसक्तियां तीन प्रकार की है। पहले किस्म की लालसाओं या आसक्तियों का संबंध हमारे लालच और आसक्तियों से संबंधित है। इन आसक्तियों की कोई सीमा नही होती। **(Vol 11, p. 236)**

जरुरी है कि व्यक्ति अपनी भावनाओं के प्रति सजग रहे, अपने बर्ताव के परिणामों पर चिंतन-मनन करें, जरुरी जानकारी हासिल कर दोबारा चिंतन मनन करें। हमें अपनी ऋणात्मक भावनाओं को खत्म नही करना है। हर भावना चाहे वह धनात्मक हो या ऋणात्मक मानव उत्क्रांति की अवस्था में उनकी अपनी खास उपयोगिता है। उनके बिना हमारे जीवन का जींदापन खत्म हो जाएगा। अगर आपको जुल्म के खिलाफ गुस्सा ही नही आता तो आप न ही अन्याय के खिलाफ कुछ करेंगे, न ही जुल्म के खिलाफ कुछ लिखेंगे, न ही इसकी अभिव्यक्ति कविता, चित्र, या भाषण या नाटकों के माध्यम से करेंगे। बल्कि आप में सिर्फ अलिप्तता का भाव रहेगा।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक बुध्द का उपदेश यह नही कहता कि हमने अपनी भावनाओं की अग्नी को पूरी तरह से बुझा देना चाहिये। बुध्द सिर्फ इतना कहते है कि हम अपने भावनाओं की अग्नी में घी डालने का काम न करें। निर्वाण का अर्थ अपनी भावनाओं पर उचित नियंत्रण कायम करना है ताकि वह सदाचार की राह पर चल सके।

इससे ज्यादा इसका अर्थ नही है। **The fire sermon does not say that the passions must be extinguished completely. It says do not add fuel to the flame. Nibbana means enough control over passion so as to enable one to walk on the path of righteousness. It was not intended to mean anything more. (Vol 11, p. 237)**

**3**) बौध्द धम्म के चरित्र-निर्माण तथा विभिन्न समस्याओं के प्रति ज्ञान प्राप्त करने का संबंध ब्राह्मण-धर्म की समाधी से बिल्कुल नही है। बुध्द की सम्म समाधी का का मतलब आवश्यक जानकारियों को हासिल करना और उसपर तर्क से चिंतन मनन कर समस्याओं का हल हासिल करने की सतत प्रक्रिया है। बुध्द की सम्म समाधी समस्या का हल ढुंढने से शुरु होती है। बुध्द ने दुखों के कारणों को तथा उनके हल को ढुंढने के लिये सम्म समाधी में तर्कपूर्ण ढंग से चिंतन मनन किया था। इसमें चमत्कार जैसी कोई बात नही थी।

बुध्द ने परेशान करने वाले तमाम दुष्ट विचारों को अलग किया, अन्न खाकर तरोताजा हुए, ताकत का अहसास कर खुद को चिंतन मनन के लिये तैयार किया। उन्हे चिंतन मनन करते हुए ज्ञान हासिल करने में चार सप्ताह लगे। उन्हे ज्ञान की प्राप्ती चार अवस्थाओं में हुई। पहली अवस्था में उन्होने तर्क तथा खोज का इस्तेमाल किया। एकांत की वजह से ऐसा करने में उन्हे आसानी हुई। दूसरी अवस्था में उन्होने एकाग्रता का इस्तेमाल किया। तीसरी अवस्था में उन्होने सजगता और शांतता का इस्तेमाल किया। चौथी अवस्था में उन्होने मन की शांतता में शुध्दता का समावेश किया और सजगता में शांतता का इस्तेमाल किया। इसतरह मन को एकाग्र करते हुए, शुध्द रखते हुए, अपने मकसद को न भूलते हुए, परेशान करने वाली अपनी समस्या पर चिंतन मनन किया। चौथे सप्ताह के अंतिम दिन उन्हे पता चला कि उनकी समस्या दो तरह की है। पहली यह थी कि दुनियां में दुख है और दूसरी कि इन इन दुखों को दूर कर लोगों को सुखी कैसे किया जाये। ... स्वाभाविक रुप से उन्होने पहला सवाल किया कि इन दुखों के कारण क्या है ? दूसरा सवाल था इन दुखों को कैसे दूर किया जाये। इन दोनों सवालों का जवाब उन्हे हासिल हुआ जिसे सम्मा बोधी कहा गया। **Having routed the evil thoughts that disturbed his mind Gautama refreshed himself with food and gained strength. He thus prepared himself for meditation with the aim of obtaining enlightenment. It took Gautama four weeks of meditation to obtain enlightenment. He reached final enlightenment in four stages. In the first stage he called forth reason and investigation. His seclusion helped him to attain it easily. In the second stage he added concentration. In the third stage he brought to his aid equanimity and mindfulness. In the fourth and final stage he added purity to equanimity and equanimity to mindfulness. Thus with mind concentrated, purified, spotless, with defilement gone, supple, dexterous, firm, impassionate, not forgetting what he is after, Gautama concentrated himself on the problem of finding an answer to the question which had troubled him. On the night of the last day of the fourth week light dawned upon him. He realised that there were two problems. The first problem was that there was suffering in the world and the second problem was how to remove this suffering and make mankind happy..... Naturally, the first question he asked himself was—" What are the causes of suffering and**

**unhappiness which an individual undergoes?" His second question was—" How to remove unhappiness ? " To both these questions he got a right answer which is called 'Samma Bodhi'. (Vol. 11, p.73-76)**

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक बुध्द की सम्म समाधी ब्राह्मण-धर्म की समाधी से बिल्कुल भिन्न है। समाधी ऋणात्मक है क्योंकि वह तात्कालीन रुप से अवरोधों को रोकती है। उसमें मन को प्रशिक्षण नही मिलता। सम्म समाधी धनात्मक है। वह मन को एकाग्र होकर कुशल कामों को करने पर विचार करने तथा अकुशल कामों से दूर रहने को प्रशिक्षित करती है। सम्मा समाधी मन को अच्छा काम करने की आदत डालने को प्रशिक्षित करती है उन्हे अच्छा काम करने की प्रेरणा-शक्ति प्रदान करती है। **Samma Samadhi is not the same as Samadhi, It is quite different. " Mere Samadhi is negative inasmuch as it leads to temporary suspension of the hindrances. In it there is no training to the mind. Samma Samadhi is positive. It trains the mind to concentrate and to think of some Kusala Kamma (Good Deeds and Thoughts) during concentration and thereby eliminate the tendency of the mind to be drawn towards Akusala Kamma (Bad Deeds and Bad Thoughts) arising from the hindrances. " Samma Samadhi gives a habit to the mind to think of good and always to think of good. Samma Samadhi gives the mind the necessary motive power to do good." (Vol. 11, p. 126-127)**

'बुध्दा एन्ड हिज धम्मा' में समाधी शब्द का उल्लेख बुध्द की सम्मा समाधी से ब्राह्मण-धर्म की समाधी से तुलना करते वक्त दो तीन बार किया गया है। उसे उस परिपेक्ष में भी किया गया है कि जब बुध्द समाधी में प्रविणता हासिल करने दिगर गुरुओं के साथ रहे। समाधी सीखने के बाद बुध्द ने समाधी को व्यर्थ समझकर त्याग भी दिया।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक कुछ लोगों का मानना है कि समाधी यह बुध्द की मूल शिक्षा है। कुछ लोगों के लिये बुध्द की मूल शिक्षा विपस्यना (एक तरह का प्राण ायाम) है। यह कुछ ऐसे लोगों के दृष्टिकोण है जिन्हे कुछ बातों का खास आकर्षण है। जैसे कि जो लोग बुध्द की मूल शिक्षा को समाधी, विपस्यना या अतिविशिष्ठ ज्ञान के रुप में देखते है। ***To some Samadhi is his principal teaching. To some it is Vippassana (a kind of Pranayam). Some of these views are those of men who have a fancy for certain things. Such are those who regard that the essence of Buddhism lies in Samadhi or Vippassana, or Esoterism. (Vol. 11, P. 225)*** इसतरह बुध्दा एन्ड हिज धम्मा किताब में विपस्यना का उल्लेख सिर्फ दो बार वह भी नकारार्थी रुप में आया है। विपस्यना बौध्द धम्म की पध्दति बिल्कुल नही है।

वास्तव में विपस्यना इ. ध्यान पध्दतियां ब्राह्मण-धर्म की पध्दतियां है जिनका मकसद बहुजनों को मूल बौध्द धम्म की समता, स्वातंत्र्य, बंधुत्व और न्याय पर आध ाारित समाज व्यवस्था के लिये शोषकों के खिलाफ संघर्ष करने की इन्केलाबी शिक्षा से दूर हटाना है। बहुजनों पर विपस्यना थोंपने के लिये कथित झूठे आर्य-सत्यों को बुध्द की मूल शिक्षा के तौर पर लादने के लिये तमाम ब्राह्मणवादी भिख्खु तथा विपस्यवादी एडी-चोटी का जोर लगाते है। ब्राह्मणवादी विपस्यना और कथित आर्य सत्यों के बीच

संबंध है। कथित ''आर्य सत्य'' बुध्द का सत्य हो ही नही सकते। डॉ. अम्बेडकर ने प्राचीन भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति नामक अपनी किताब में स्पष्ट कर दिया है कि आर्य ब्राह्मण एक दूराचारी, नैतिकताशुन्य, हिंसाचारी और तरह तरह के अंधविश्वासों से ग्रस्त जमात थी। बाप बेटी से, मां बेटे से, भाई बहन से, ससुर बहु से, दादा पोती से लैंगिक संभोग करते थे। आर्य खुले मैदान में सबके सामने संभोग करते थे। वे जानवरों से संभोग करते थे। वे अपनी बहु-बेटी और बिबियों को पैसों की एवज में बेचते थे और उन्हे यौनाचार के लिये किराये पर भी देते थे। वे सोमरस और शराब के नशे में धुत रहते थे। यज्ञ में प्राणियों की बली चढाते थे। वे टोने-टोटकों में भरोसा करते थे। उन्होने हैवानी हिंसक चातुवर्ण्य की समाज-पध्दति का निर्माण किया। ऐसे आर्यो के पास उदात्त सत्य कहां से आ सकता है जिसे बौध्द धम्म में शामिल किया जाये ? आर्य शब्द से उच्च गुणों का नही बल्कि निम्नतर दुर्गुणों का अहसास होता है। डॉ. अम्बेडकर ने कथित आर्य सत्यों को नकार दिया है।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक क्या ये आर्य सत्य बुध्द की मूल शिक्षा का हिस्सा है ? ये आर्य सत्य बुध्द की शिक्षा की जडों पर ही वार करते है। अगर जीवन दुख है, मौत दुख है, पुर्नजन्म दुख है तब तो हर बात का अंत है। तब कोई धर्म, कोई दर्शन इन्सानों को जीवन में खुशी हासिल करने में कोई मदद नही कर सकता। दुख से बचना नामुमकिन है तो धर्म क्या कर सकता है, बुध्द दुख से बचाने के लिये क्या कर सकते है अगर दुख जन्मतः ही मौजूद है ? ये चार आर्य सत्य गैर बौध्दों को बुध्द ध म्म की शिक्षा को कबुल करने के रास्ते में पैरों में बंधे वजन है। क्योंकि ये आर्य सत्य किसी भी आशा को नकार देते है। ये चार आर्य-सत्य बुध्द की शिक्षा को निराशावादी शिक्षा में बदल देते है। क्या ये आर्य सत्य बुध्द की मूल शिक्षा का हिस्सा है या उसे {ब्राह्मण} भिख्खुओं व्दारा बाद में घुसाडा गया है ? **Do the Aryan truths form part of the original teachings of the Budhha ? this formula cuts at the root of Buddhism. If life is sorrow, death is sorrow and rebirth is sorrow, then there is an end of everything. Neither religion nor philosophy can help a man to achieve happiness in the world. If there is no escape from sorrow, then what can religion do, what can Buddha do to relieve man from such sorrow which is ever there in birth itself ? The four Aryan truths are a great stumbling block in the way of nonbuddhists accepting the gospel of Buddhism. For the four Aryan truths deny hope to man. The four Aryan truths make the gospel of the Buddha a gospel of pessimism. Do they form part of the original gospel or they a later accretion by the monks ?** (***Vol 11, Introduction***)

इन कथित ब्राह्मणवादी आर्य सत्यों का सार यही है कि जन्म दुख है, बीमारी दुख है, बुढापा दुख है, मौत दुख है। व्यक्ति हीन जीवों के रुप में पूर्नजन्म लेकर अनंत काल तक दुख भोगते रहता है। इस दुखःमय जन्म-पुर्नजन्म के चक्र से मुक्त होने का उपाय ब्राह्मणवादी ध्यान और विपस्यना है। ध्यान और विपस्यना से जैसे ही व्यक्ति को अहसास हो जाता है कि वह परमात्मा का हिस्सा है तो जन्म पुर्नजन्म के चक्र से उसे मुक्ति मिल जाती है। यह है ब्राह्मणवादी दर्शन जिसे बुध्द की मूल शिक्षा के रुप में थोंपने के लिये तमाम ब्राह्मणवादी और उनके दलाल दलित बुध्दिजीवी एडी-चोटी

का जोर लगा रहे है। उन्होने झुठमूठ यह कहानी प्रचारित की कि बुध्द ने एक बीमार इन्सान को देखा, एक बुढे व्यक्ति को देखा और एक लाश को देखा और जीवन से विरक्त होकर सन्यास ले लिया और इन दुखों से छुटकारा पाने के लिये समाधी यानि विपस्यना की खोज की।

वास्तव में बुध्द व्दारा सन्यास लेने की सच्चाई यह है कि शाक्य और कोलिया गणों के बीच रोहिणी जल का विवाद युध्द से हल करने के फैसले का विरोध बुध्द ने किया था। इस विरोध की सजा के तौर पर अंततः यह तय किया गया कि सिध्दार्थ गौतम देश से बाहर जाकर सन्यास ग्रहण करेंगे इसतरह उनका परिवार प्रतिशोध से बच जाएगा और राजा बुध्द को सजा देने के आरोप में शाक्यों को सजा भी नही दे पाएगा। बुध्द के देश से बाहर जाने के बाद जनता में इस मसले पर खुब चर्चा हुई और उन्होने युध्द के खिलाफ प्रदर्शन किये। जनता के दबाव में जल विवाद को आपसी बातचीत से हल करने का फैसला लिया गया। यह बात बुध्द को बताकर उनसे प्रार्थना की गई कि वे सन्यास छोडकर वापस लौट आए क्योंकि विवाद का हल हो गया है। तब बुध्द ने सोचा कि एक विवाद तो हल हो गया है लेकिन ऐसे अनगिनत विवाद के कारण मौजूद है जिनसे दुख निर्माण होते है इसलिये वे इस समस्या का कायम हल खोजने चल पडे थे। इसतरह बुध्द ने कभी कथित चार आर्य सत्य नही कहे।

कुछ दलाल दलितों ने अपना स्तर इतना गिरा लिया है कि वे ब्राह्मणवादी संकल्पनाओं की शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने वाले ब्राह्मणवादी नशेडी ओशो रजनीश इ. को बुध्द पुरुष प्रचारित कर रहे है। कुछ ने ब्राह्मणवादी नशेडी ओशो रजनीश को बुध्द पुरुष साबित करने के लिये किताबें तक छापी है ताकि ब्राह्मणवादी ध्यान विपस्यना को डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों पर थोंपा जा सके। जबरन झुठमूठ वे विपस्यना और ध्यान को बुध्द की मूल शिक्षा प्रचारित कर रहे है ताकि डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों को बुध्द की सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक क्रांति की शिक्षा से दूर किया जाये। ये सभी दलाल डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म को ध्यान, विपस्यना वाले तंत्रयान में तब्दिल करना चाहते है। इन ब्राह्मणवादी दलालों से वैसा ही सलुक किया जाना चाहिये जैसा सलुक दलालों के साथ किया जाता है।

4) डॉ. अम्बेडकर ने अपनी किताब प्राचीन भारत में क्रांति तथा प्रतिक्रांति में स्पष्ट कर दिया कि आर्य-ब्राह्मण किस तरह से नैतिकताशुन्य, अज्ञानी, अंधविश्वासों से घिरे हुए, शराबी हिंसक इ. थे। बुध्द और उनका धम्म किताब में ब्राह्मणों को एक जाति समुदाय के तौर पर ही समझा गया है। डॉ. अम्बेडकर ने ब्राह्मणों की चातुवर्ण्य समाज व्यवस्था को अमानवी हैवानी व्यवस्था कहा है। इसके बावजुद ब्राह्मणवादियों के दलाल दलित नेता तथा दलित बौध्द भिख्खु ब्राह्मणों को सर्वगुणसंपन्न जता रहे है। ऐसी हैवानियत को सबसे बडा गुण बताना घोर मक्कारी के सिवा क्या है ? ऐसा काम ब्राह्मणवादी या उनके दलाल ही कर सकते है। इससे वे सामाजिक सांस्कृतिक संघर्ष को न सिर्फ छुपाना चाहते है, शोषक और शोषितों के बीच के फर्क को मिटाना चाहते है बल्कि ब्राह्मणों को सर्वगुणसंपन्न मानकर उन्हे अपने मुक्तिदाताओं के रुप में स्वीकारने की मानसिकता दलितों में पैदा करने के लिये एडी चोटी का जोर लगा

रहे है। ऐसे दलालों ने जिनमें दलाल भिख्खुओं तक का समावेश है ''सच्चा ब्राह्मण : बुध्द'' जैसे शिर्षक से मराठी इ. भाषाओं में किताबें छापी है।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक ब्राह्मण हमेशा ही ब्राह्मण रहता है फिर वह चाहे कोई भी मुखौटा क्यों ना धारण कर ले या किसी भी संगठन में क्यों ना शामिल हो जाये। यह इसलिये है क्योंकि ब्राह्मण अपनी चातुवर्ण्य पर आधारित श्रेणीबध्द असमानता की सामाजिक व्यवस्था को कायम रखना चाहता है। क्योंकि इसी श्रेणीबध्द असमानता की सामाजिक व्यवस्था ने ब्राह्मणों को सबसे उपर स्थापित किया है। बौध्द धम्म समानता में विश्वास करता है। बौध्द धम्म ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा और ताकत की जडों पर ही प्रहार करता है। इसलिये ब्राह्मण बौध्द धम्म से नफरत करते है। यह पूरी तरह से मुमकिन है कि अगर ब्राह्मणों को बौध्द धम्म के प्रचार प्रसार के काम का नेतृत्व सौंपा जाये तो वे अपनी ताकत का इस्तेमाल करते हुए या तो उसे हानी पहुंचाएंगे या फिर उसे गलत दीशा में मोड देंगे। इसलिये हमारे संगठनों में ब्राह्मणों को किसी भी पदों से दूर रखना कम से कम हमारे आरंभीक अवस्थाओं में अत्यंत जरुरी है। ***A Brahmin will remain a Brahmin no matter what colour he assumes or what party he joins, That is because Brahmins want to maintain the system of graded social inequality. For it is this graded inequality which has raised the Brahmins above all and to be on the top of everybody. Buddhism believes in equality. Buddhism strikes at the very root of their prestige and power. That is why Brahmins hate it. it is quite possible that if the Brahmins are allowed to lead the movement of revival of Buddhism they may use their power to sabotage it or misdirect it. The precautions to exclude them from positions of power at least in the early stages of our movement is, therefore, very necessary. (Vol. 17 Part III P. 511)***

**5**) यह बेहद जरुरी है कि हम अपनी जातीय पहचान को बरकरार रखें क्योंकि इसी जातीय पहचान की वजह से दलित, ओबीसी, आदिवासी संगठनों की ताकत में बेशुमार इजाफा हुआ है। जातियों की पहचान की वजह से ही मान. कांशीराम ने शो. षित जातियों को जोडकर ताकतवर राजनीतिक संगठन कायम किया। जातीय पहचान की वजह से ही ओबीसी, दलित, मुस्लिम, आदिवासी अपने मामलों में एक हो जाते है फिर चाहे वे किसी भी पार्टी संगठन में क्यों ना हो। यही वजह है कि बिजेपी, कांग्रेस, ब्राह्मणवादी नकली कम्युनिस्ट पार्टियां चाहकर भी अपनी ब्राह्मण महिलाओं के लिये महिला आरक्षण में **100** फीसदी आरक्षण लागू नही कर पा रही है। यही वजह है कि ब्राह्मणवादी ताकतें जातीय पहचान को लेकर सबसे ज्यादा घबराई हुई है। इसलिये वे अपने तमाम एजन्टों के जरिये जिनमें दलाल बौध्द भिख्खु भी शामिल है शोषितों की जातीय पहचान को खत्म करने के लिये एडी चोटी का जोर लगा रहे है। बुध्द ने शोषकों के चरित्र को पहचान कर ही 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' कहा था। उन्होने 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' नही कहा था। इसके बावजूद दलितों में ब्राह्मणवादियों के दलाल बुध्दिजीवी और दलाल भिख्खु समानता की झूठी दुहाई देकर इस बात को प्रचारित करने में लगे है कि हमने अपने जाति-सूचक उपनाम खत्म कर देने चाहिये। नाम बदलने से न ही कभी समानता कायम हुई है न हो सकती है। खुद ब्राह्मणों ने जातियों को आरक्षण से वंचित करने के लिये उनका नया नामांकन किया था जैसे कि

उन्होने नाईयों को ठाकुर लिखने को कहा था। लेकिन सवर्णे ने अपने नाम के आगे ठाकूर लिखकर अपनी जाति पहचान कायम रखी जबकि नाईयों को नाम के पीछे ठाकूर लिखने के लिये कहा गया था। डॉ. अम्बेडकर ने नाम बदलने से कोई फायदा क्यों नही है इसके संबंध में विस्तृत रुप से लिखा है। जाति से पैदा होने वाली हीनता की भावना नाम बदलने से नही बल्कि शोषकों के खिलाफ कठोर संघर्ष के लिये काबिल बनने से खत्म होती है। मा. कांशीराम खुद को गर्व से चमार कहते थे। मायावती भी गर्व से खुद को चमार कहती है बावजूद इसके कई सवर्ण-ब्राह्मण उनके कदमों पर गिरते है क्योंकि उन्होने ताकत हासिल कर ली है। हीनता की भावना ताकत पैदा करने से दूर होती है।

समानता नाम बदलने से नही बल्कि विचारों में मूलभूत परिवर्तन आने से होती है। मुसलमान एक ही थाली में खाना खाते है भले ही उनके नाम अलग अलग क्यों ना हो, उनका रंग अलग अलग क्यों ना हो या फिर उनका प्रांत अलग अलग क्यों ना हो। इसलिये समानता अगर उन्हे सचमूच में लानी है तो लोगों के विचारों में मूलभुत परिवर्तन लाने में अपनी सारी लगानी चाहिये लेकिन दलाल भिख्खुओं को समानता से कोई लेना देना नही है। उन्हे सिर्फ अपनी दलाली से मतलब है। वे हमारे संघर्ष की ताकत यानि जातीय पहचान को ही खत्म करना चाहते है। जबकि जातीय पहचान की वजह से ही शोषित जातियां एक होकर आपस में सहयोग कर रही है। लगातार एक-दूसरे के करीब आ रही है। यहांतक कि कई आपस में शादी-ब्याह तक कर रहे है। जातीसूचक उपनाम बदलने का प्रचार करने वाले ऐसे ब्राह्मणवादी दलाल भिख्खुओं को डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों ने न ही कोई दान देना चाहिये और न ही उनसे किसी प्रकार का कोई सहयोग करना चाहिये।

**6**) डॉ. अम्बेडकर ने ईश्वर, आत्मा, पुर्नजन्म इ. पर आधारित धर्मो से बौध्द धर्म की विशेषताएं स्पष्ट करने के लिये बुध्द की शिक्षा को धम्म कहा है और धम्म ही कहने की उन्होने शिक्षा भी दी है।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक बुध्द जिसे धम्म कहते है धर्म का अध्ययन करने वाले युरोपियन उसे धर्म कहते है। लेकिन दिगर धर्मो और धम्म के बीच के फर्क बहुत ज्यादा है। इस बात को ध्यान में रखते हुए वे बुध्द के धम्म को धर्म के रुप में स्वीकार करने से इन्कार करते है। हमें इस बात पर अफसोस जताने की कोई जरुरत नही है। यह उनका अपना नुकसान है। इससे बुध्द के धम्म को कोई नुकसान नही पहुंचता। बल्कि यह इस बात को दर्शाता है कि उनके धर्मो में क्या होना चाहिये। इसलिये धम्म बनाम धर्म के विवाद में पडने की बजाय यही अच्छा है कि हम लोगों को धम्म बताते रहे और यह बताते रहे कि धम्म धर्म से किस तरह से भिन्न है। ***What the Buddha calls Dhamma is analogous to what the European theologians call Religion. But there is no greater affinity between the two. On the other hand, the differences between the two are very great. On this account some European theologians refuse to recognise the Buddha's Dhamma as Religion. There need be no regrets over this. The loss is theirs. It does no harm to the Buddha's Dhamma. Rather, it shows what is wanting in Religion. Instead of entering into this controversy it is better to proceed to give an idea of Dhamma and show how it differs from Religion. (Vol. 11 p. 316)***

इसके बावजुद डॉ. अम्बेडकर के मन में कोई कोई शक नही था कि बुध्द का धम्म 'धर्म' है। डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट रुप से कहा है कि कुछ आलोचक यह आलोचना करते है कि बुध्द का धम्म 'धर्म' नही है। ऐसी आलोचना पर हमने कोई ध्यान नही देना चाहिये। लेकिन अगर कोई जवाब देना ही है तो हमें बता देना चाहिये कि बुध्द का धम्म ही सच्चा धर्म है और जो लोग इसे नही मानते उन्होने धर्म की परिभाषा बदल देनी चाहिये। ***Some critics of Buddhism allege that Buddhism is not a religion. No attention should be paid to such criticism. But if any reply is to be given, it is that Buddhism is the only real religion and those who do not accept this must revise their definition of religion. (Vol. 11 P. 452)*** डॉ. अम्बेडकर ने बुध्दा एन्ड हीज धम्मा में कई दर्जन बार धम्म को धर्म कहा है। अपनी दिगर किताबों में भी उन्होने धम्म को धर्म कहा है। डॉ. अम्बेडकर व्दारा बौध्द धम्म को धर्म समझने की सबसे बडी वजह यह है कि बौध्द धम्म सिर्फ जीने की पध्दती ही नही है बल्कि वह बंधुत्व, समानता और न्याय पर आधारित लोकतांत्रिक शोषण विहिन समाज व्यवस्था कायम करने का सामाजिक राजनीतिक दर्शन भी है। धम्म शब्द का गलत फायदा उठाते हुए गोयनका इ. ब्राह्मण ावादी तथा उनके दलाल बौध्द धम्म को जीने की कला, जीवन पध्दती इ. कहकर यह प्रचारित कर रहे है कि बुध्द ने कोई धर्म नही दिया इसलिये हमने खुद को बौध्द धर्म के अनुयायी कहने की बजाय खुद को सिर्फ धम्मीस्ट कहना चाहिये। धम्मीस्ट शब्द से इतना भी पता नही चलता कि यह जीने की पध्दती किसने बताई है। धम्मीस्टों को बुध्द से दूर कर ब्राह्मण-धर्म की संकल्पनाओं की दलदल में आसानी से डुबाया जा सकता है। यह प्रयोग ब्राह्मणवादी नशेडी ओशो रजनीश पहले ही कामयाबी से कर चुका है। नशेडी ओशो रजनीश, समलैंगिक नकली भिख्खु संघरक्षित, तथा ब्राह्मणवादी गोयनका यही चाहते रहे है कि जब बुध्द का धम्म ही नही बचा तो बुध्द के धम्म की दफना दी गई राजनीतिक शिक्षा का तो वजूद ही नही होगा। ऐसी चालबाजी 'धर्म' के साथ नही की जा सकती क्योंकि धर्म की स्पष्ट सीमारेखाएं खिंची होती है।

ये ब्राह्मणवादी इस हकीकत को भी लोगों से छुपाना चाहते है कि दुनियां में आज तक दो किस्म के धर्म हुए है। पहली किस्म शोषण परस्त धर्मो की है जिसमें ब्राह्मण धर्म, झाओनिस्ट यहुदी धर्म तथा ईसाई पूजारीवाद प्रमुख है। दूसरे धर्म वे धर्म है जो न सिर्फ हर किस्म के दमन, शोषण का विरोध करते है बल्कि समानता, बंधुत्व, न्याय और इन्सानियत पर आधारित लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था कायम करना चाहते है। ऐसे धर्मो में बौध्द धर्म, इस्लाम तथा बहुजन संतों के पंथों का समावेश होता है। हालांकि बहुजन संतों के तमाम धर्म-पंथ बुध्द की शिक्षा और इस्लाम से ही प्रेरित रहे है। अगर शोषण विरोधी धर्मो की पहचान ही खत्म कर दी जाये तो शोषण का विरोध करने वाली धर्म संस्कृति का सवाल ही कहां पैदा होता है ? यही इन ब्राह्मणवादियों का मकसद है। शैतान उपासक इल्युमिनॅटी के इशारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ के नेतृत्व में ध ार्मिक समरसता और विश्व शांति के नाम पर शोषण विरोधी धर्मो को शोषण परस्त धर्मो के साथ समरसता कायम कर उनका शोषण विरोधी चरित्र खत्म करने की अंर्तराष्ट्रीय साजीश का कच्चा-चिट्ठा इंटरनेट पर मौजूद है। लेकिन ब्राह्मणवादियों के दलाल दलित बुध्दिजीवी इंटरनेट पर गंदगी दिखाई जाती है जैसी थोथी दलीलें देकर इंटरनेट पर

उपलब्ध तमाम तथ्यों को ही नकारकर इस अतंर्राष्ट्रीय षडयंत्र को नकारने तथा अपने 'माईबाप' समलैंगिक संघरक्षित, ब्राह्मणवादी नशेडी ओशो रजनीश, इ. के कारनामों को छुपाने की थोथी कोशिश करते है। यह दलील ऐसी ही है कि बिजली का झटका लगता है इसलिये बिजली को नकार दो। ऐसी दिमागी दिवालिया दलीलों से पता चलता है कि ये ब्राह्मणवादियों के कितने बेशर्म दलाल है। इसलिये डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों ने 'बाबासाहब' का नाम जपकर अपने दलाल चरित्र को छुपाने की कोशिश करने वाले आस्तीन के दलाल सांपों को पहचान कर अपने नवयान बौध्द धम्म के अस्तित्व को मिटाने की इनकी हर ब्राह्मणवादी कोशिश का पूरजोर विरोध करना चाहिये।

## 8) बुध्द की सामाजिक-राजनीतिक शिक्षा पर अमल !

1) डॉ. अम्बेडकर चाहते थे कि नवयान बौध्द धम्म के भिख्खु कम्युनिस्ट संगठनों के बेहतर पर्याय बने। डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि हमने यह नही भूलना चाहिये कि आज युरोप की जनता का तथा एशिया के युवकों का एक बडा बहुमत कार्ल मार्क्स को ऐसा इकलौता संदेशदाता मानता है जिसकी पूजा की जानी चाहिये। वे भिख्खु संघ के बडे हिस्से को पीला खतरा मानते है। इसको सूचक के तौर पर लेते हुए भिख्खुओं ने खुद में इस तरह का बदलाव लाना चाहिये ताकि कार्ल मार्क्स के साथ उनकी तुलना की जा सके और बुध्दिजम कार्ल मार्क्स से प्रतियोगिता कर सके। We *must all remember that today a large majority of people in europe and a large majority of youngsters in Asia look upon Karl Marx as the only profet who could be worshipped. And they regard, the largest part of the Buddhist Sangha as nothing but a yellow peril. That is an indication which Bhikkhus must take up, must understand, to reform themselves in order that they could be compared with Karl Marx; and Buddhism could compete with it. (Vol. 17 Part III P. 550)*

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक क्या बुध्द कार्ल मार्क्स को जवाब दे सकते है ? ऐसे सवाल शायद ही कभी बौध्द धम्म पर चर्चा करते वक्त उठाये जाते है। मेरा जवाब यह है कि बुध्द का एक सामाजिक संदेश है। वह इन सारे सवालों के जवाब देते है। लेकिन आधुनिक लेखकों ने उन जवाबों को दफना दिया है। *"Could Buddha answer Karl Marx ? " These quests are hardly raised in discussing the Buddha's Dhamma. My answer is that the Buddha has a Social Message. He answers all these questions. But they have been burried by modern authors. (Vol. 11 P. 226)*

2) बुध्द के इन जबाबों पर ही नही बल्कि इस बात पर भी पर्दा डाला जा रहा है कि बुध्द का कोई सामाजिक राजनीतिक संदेश भी था। बुध्द के सामाजिक राजनीतिक संदेश को अमल में लाने के लिये यह अनिवार्य है कि हम खुद में प्रज्ञा, शील और करुणा का विकास करते हुए शोषण के खिलाफ अपना संघर्ष जारी रखे। संघर्ष को सही दीशा में चलाने के लिये यह जरुरी है कि वे विश्व की समूची शोषण व्यवस्था को भली भाँति जान समझ ले क्योंकि भारत की आर्थिक सामाजिक नीतियां वैश्विक झाओनिस्ट ब्राह्मणवादी शैतानी गठबंधन की नीतियों का ही हिस्सा है।

3) बुध्द के सामाजिक राजनीतिक संदेश को अमल में लाने के लिये डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म के अनुयायियों की भूमिका मुख्य भूमिका होगी जबकि भिख्खु इसमें सहायक भूमिका निभाएंगे और साबित करेंगे कि वे सिर्फ पीला खतरा नही है बल्कि मार्क्स के संगठनों का माकूल जवाब भी है।

4) बुध्द के सामाजिक-राजनीतिक क्रांति के कार्य :-

1) आत्मसुरक्षा दल :- बौध्द धम्म का भारत से विनाश होने का एक बडा कारण बौध्द धम्म के दुश्मन शासकों से बौध्दों की सुरक्षा करने की कोई सामाजिक सुरक्षा यंत्रणा तैयार नही की गई थी। इस बात को डॉ. अम्बेडकर ने बडी शिद्दत से महसूस किया और सबसे पहले उन्होने समता सैनिक दल और आत्मबलिदान दलों को कायम किया था। इसलिये दलितों शोषितों के आत्मसुरक्षा दल कायम करना हमारी सबसे बडी प्राथमिकता होनी चाहिये।

अ) आत्मसुरक्षा दलों का काम शोषित समाज को ब्राह्मणवादी दमन-शोषण के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करना और उन्हे संघर्ष के लिये मानसिक और शारीरिक रुप से सक्षम बनाना होगा।

ब) आत्म सुरक्षा दल ओबीसी, दलित, मुस्लिम आदिवासी जाति-समूहों के बीच समन्वयन कायम करने के लिये परस्पर सहयोग कमिटियों को कायम करेगा जो सतर्कता से ब्राह्मणवादी षडयंत्रों पर निगाह रखेगी ताकि जातीय या सांप्रदायिक दंगों को भडकाया ही ना जा सके।

क) जातीय या सांप्रदायिक तनाव की किसी भी आशंका के मद्देनजर आत्मसुरक्षा दल बहुजन जातियों के तथा मुस्लिम कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर ब्राह्मणवादी षडयंत्रों को नाकाम कर षडयंत्रकारियों के खिलाफ जागरुकता मुहिम चलाएगा।

ड) आत्मसुरक्षा दल संभावित जातीय अत्याचारों का कामयाबी से मुकाबला करने के लिये 1) अपने प्रशिक्षित आत्मरक्षकों की जरुरी तादाद तैयार करेगा 2) अन्याय के खिलाफ आर्थिक मदद यंत्रणा विकसित करेगा ताकि जातीय अन्याय पीडितों को एकसाल का राशन मुहैया किया जाये ताकि उनपर ब्राह्मणवादियों व्दारा किये जा रहे आर्थिक बहिष्कार का कोई प्रभाव न हो सके। 3) अन्याय के खिलाफ न्यायिक संघर्ष को मजबूत करेगा ताकि अन्यायग्रस्त दलित-शोषितों के कानूनी मामले अंत तक पूरी शिद्दत के साथ लडे जा सके। 4) अन्यायी लोगों के खिलाफ राजनीतिक मुहिम चलाने के लिये विभिन्न जाति समुहों के समर्थक लोगों की सहायक यंत्रणा कायम करेगा तथा अन्याय को संरक्षण देने वाले, उकसाने वाले नेताओं या अधिकारियों के खिलाफ हर संभव मुहिम चलाकर उन्हे राजनीतिक रुप से नुकसान पहुंचाने और अगर उनका व्यवसाय या व्यापार है तो उनके आर्थिक बहिष्कार इ. से उन्हे आर्थिक नुकसान पहुंचाने की पूरी कोशिश करेगा। 5) इस बात को हर तरह से सुनिश्चित किया जाएगा कि जुल्म करने वालों का नुकसान हो, उन्हे भी तकलीफों का समाना करना पडे।

2) योजना बनाकर दलितों या मुस्लिमों को गांव या शहर में इस तरह से बसाने की कोशिश की जाएगी जिससे वे एक-दूसरे की मदद से खुद को सुरक्षित महसूस कर सके। इस संबंध में उपाय खोजे जाएंगे। बहुजनों के पार्टी संगठनों पर

दबाव बनाया जाये कि वे इस काम को सबसे बडी प्राथमिकता दे।

**3**) नवयान बौध्द धम्म के भिख्खु तथा अनुयायी शोषित जातियों के बीच छोटे छोटे चर्चासत्र लेकर उन्हे कार्ल मार्क्स और बुध्द की विचारधाराओं के बीच की समानता तथा भेद से वाकिफ कराया जाये और शोषण के खिलाफ पूर्ण रुप से जागरुक करें।

**4**) नवयान बौध्द धम्म के भिख्खु तथा अनुयायी शोषित जातियों के बीच एकता कायम करने के लिये एक-दूसरों के मामलों में एक दूसरे को मदद करे।

**5**) गैर आर्य-ब्राह्मण मूलनिवासी देश का सबसे बडा बाजार है और अगर वह ब्राह्मणवादियों के उत्पादनों का चयनात्मक बहिष्कार करें और छोटे-छोटे स्तरों पर निर्मित पीछडे पसमांदा जाति तबकों के लोगों व्दारा निर्मित उत्पादों का ही उपयोग करें तो झाओनिस्ट ब्राह्मणवादियों को परास्त किया जा सकता है। इस में नवयान बौध्द ध म्म के भिख्खु तथा अनुयायी संभावनाओं की खोज कर उन पर शिद्दत से काम करें।

**6**) नवयान बौध्द धम्म के अनुयायी ब्राह्मणवादी शोषकों के विभिन्न अंर्तविरोधों का भली भाँति वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करें तथा इन अंर्तविरोधों से विभिन्न स्तरों पर फायदा उठाकर ब्राह्मणवादी शोषकों को आपस में लडा कर ध्वस्त करने की कार्यनीति पर अमल करें।

**9**) धम्म बचाने में सक्रियता की उम्मीद किससे ना करें ?

लोगों की हमेशा से यही अपेक्षा रही है कि धम्म तथा समाज की समस्याओं को सुलझाने का काम संगठनों के नेताओं का है। इसलिये लोग खुद कुछ न करते हुए हर मामले में नेताओं पर निर्भर रहे है। अनुभव सिखाता है कि नेताओं पर निर्भर रहने से हम अपने नवयान बौध्द धम्म की हिफाजत नही कर पाएंगे। इसके कई कारण है :-

हमारे नेता सिर्फ भाषण देना जानते है। पहली किस्म के नेता भाषण देकर वोट मांगने का काम करते है जबकि दूसरी किस्म के नेता भाषण देकर चंदा इकट्ठा करने का काम करते है। ये दोनों ही किस्म के नेता अपने कार्यकर्ताओं की तादाद सिर्फ इसलिये बढाते है ताकि ज्यादा से ज्यादा वोट या ज्यादा से ज्यादा चंदा वसूला जा सके।

नेताओं को भाषण देने के अलावा कुछ नही आता इसलिये वे अपने कार्यकर्ताओं को सिर्फ 'हिज मास्टर्स वॉयस' यानि भोंपू बनाने का काम करते है जो अपने नेता की बातों को दोहराकर अपने जैसे और ज्यादा भोंपू पैदा कर अपने अपने नेताओं के लिये वोट अथवा नोट इकट्ठा कर सके।

नेताओं ने मिशन के किसी भी काम को कभी अंजाम नही दिया। सिर्फ भाषण दिये गए है। मसलन, **1**) बंगाली दलितों की समस्याओं पर तो खुब बोला गया लेकिन उनकी सुरक्षा करने की स्थानीय स्तरों पर कोई यंत्रणा नही बनाई गई जिससे बंगाली दलितों को घुसपैठिये करार देकर उन्हे बंगला देश की नो मॅन्स लँड में धकेलकर उनका जनसंहार जारी है। **2**) सांप्रदायिक दंगों की तो बडी बातें की गई लेकिन स्थानीय स्तरों पर ओबीसी, दलित, मुस्लिम, आदिवासियों की दंगा-प्रतिरोधी कमिटियां बनाकर उन्हे कभी सक्रिय नही किया गया। **3**) जातीय अत्याचारों की खुब बातें की गई लेकिन

पीडितों को आर्थिक बहिष्कार से बचाने के लिये साल भर का अनाज कभी नही पहुंचाया गया, उनके मामले अंत तक कभी नही लडे गए। 4) हमारे छात्र तरह तरह के जुल्म और नाइन्साफी के शिकार होते रहे लेकिन उनके लिये कभी कोई मार्गदर्शन केन्द्र तक नही खोला गया, अन्याय दूर करने की बाते तो बडी दूर की है। हर क्षेत्र में जुल्म ज्यादती ओर नाइन्साफी है किस किस पर बात करे ?

इन सभी मामलों पर कुछ करने का मतलब स्थानीय कार्यकर्ताओं को संबंधित कमिटियों के जरिये सक्रिय और आत्मनिर्भर बनाना है। तब कार्यकर्ता नेताओं पर निर्भर नही रहेंगे, नेता की पकड ढीली हो जाएगी। इसलिये नेता अपने कार्यकर्ताओं को हिज मास्टर्स वॉयस वाले 'भोंपू' से ज्यादा कुछ नही बनने देना चाहते।

हमारे नेताओं को सिर्फ बोलना आता है लेकिन उन्होने तात्कालीन हालातों पर अपना मुंह तक नही खोला। जैसे कि अ) मुंबई हमले की सच्चाई को बेनकाब करने की किसी ने कोशिश नही की हम छँटाक भर लोगों ने ''**Mumbai Attacks Expose Mossad-CIA Plan to Disrupt, Balkanize and Enslave India and Pakistan** '' नामक बुकलेट इंटरनेट पर जारी की। ब) जब पिछले लोकसभा चुनाव हुए तो उसकी समीक्षा कर जरुरी सबक किसी ने नही निकाले। हमी ने इंटरनेट पर ''**Fate of Indigenous Organizations After Communal Casteist Congress Comes to Crown**'' नामक बुकलेट जारी की। क) अन्ना हजारे ने बहुजनों को गुमराह करने का आन्दोलन चलाया तो किसी ने उसे बेनकाब करने का अभियान नही चलाया। हमने ''जनलोकपाल तो बहाना है असली मकसद ढोंग-पाखंड से झाओनिस्ट मनुवादी ब्राह्मणराज लाना है'' नामक पर्चा निकाल कर उसे अपनी क्षमता के मुताबिक भारत भर में भेजा और इंटरनेट पर वीडिओ जारी किया। हमारे जैसे ''इन मिन तीन'' लोग अगर कुछ कर सकते है तो हमारे कथित बडे बडे संगठन क्यों कुछ नही करते यह खोजबीन का विषय है।

प्रमोशन / पदोन्नती में रिजर्वेशन के मामले में टी.वी. पर दलितों का अध ूरा पक्ष रखा जाता देख सुनकर भी किसी ने जंतर मंतर पर या इलेक्ट्रनिक मीडिया के सामने हाथों में झंडे-बॅनर लेकर दलितों का सही पक्ष रखने की कोशिश नही की। मजदूर संगठन के अधिकतर नेता भी चूप रहे। ''गांधी के बाद युगपुरुष कौन'' जैसे मामलों में जनता को दीशानिर्देश जारी नही किया गया। हमारे नेता परिस्थिति की आवश्यकता के मुताबिक नही बल्कि जब उनका मूड होता है तब लाखों रुपये खर्च कर संम्मेलन आयोजित करते है और वहां बोलते है। वहां वे वही बोलते है जिसे बोलने का उनका ''मूड'' होता है।

कुछ नेता जो दलाल है वे ब्राह्मणवादी गोयनका, समलैंगिक संघरक्षित, सुभूति, नशेडी ओशो-रजनीश का प्रतिष्ठान इ. के ब्राह्मणवादियों को मदद करने में जुटे है। इन दलाल नेताओं की मदद से दीक्षाभूमि पर गोयनका पॅगोडा बनाकर दीक्षा-भूमि को ब्राह्मण धर्म की विपस्यनाभूमि में तब्दिल करने की शैतानी साजीश को अंजाम दे रहा है।

इन हालातों में हमने हमारे संगठनों के नेताओं पर कितना निर्भर रहना है यह आपके हमारे सोचने की बात है।

**10**) धम्म बचाने में सक्रियता की उम्मीद किससे करें ?

**1**) भिख्खुओं में कई भिख्खु ऐसे है जो सचमुच डॉ. अम्बेडकर के विचारों से प्रेरित है तथा डॉ. अम्बेडकर के नवयान बौध्द धम्म की हिफाजत करने का काम करना चाहते है। लेकिन वे अपने बलबूते पर ऐसा बिल्कुल नही कर सकते क्योंकि अधिकतर भिख्खु पंडेगीरी में ही अपना फायदा देखते है। ऐसे भिख्खुओं को ब्राह्मणवादी ताकतों का तथा दलाल नेताओं का पूरा पूरा समर्थन हासिल है। इसलिये ब्राह्मणवादी भिख्खुओं के बहुमत के चलते कम तादाद वाले भीमयान बौध्द धम्म से प्रेरित भिख्खु अपने बलबुते पर भीमयान बौध्द धम्म को ब्राह्मणवादी कल्टों में तब्दिल होने से नही रोक सकते।

**2**) नवयान / भीमयान बौध्द धम्म को ब्राह्मणवादी कल्टों में रुपांतरित होने से तभी रोका जा सकता है जब आम जागरुक नागरिक अपने दिलों दिमाग से यह तय कर ले कि नवयान बौध्द धम्म की हिफाजत करने की सबसे पहली जिम्मेदारी लोगों की खुद की है नेताओं की नही तभी नवयान बौध्द धम्म को ब्राह्मणवादी कल्टों में रुपांतरित होने से रोका जा सकता है।

**3**) बस्ती के नागरिक तथा युवा मौजूदा बुकलेट में बताये हुए नवयान बौध्द ध म्म के **1**) धम्म के मुताबिक चरित्र निर्माण के काम **2**) समाज सेवा के काम, तथा **3**) सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक इन्केलाब के कामों को अलग अलग गैरराजनीतिक कमिटियों के माध्यम से बस्ती के आम लोगों की मदद से अंजाम देने की कोशिश करें। बस्ती के पांच घर यह तय कर ले कि धम्म के लिये पूर्णकालीन काम करने वाले व्यक्ति को वह प्रत्येक **7** दिन में एक बार, यानि महिने में सात बार खाना खिलाएगा तो एक पूर्णकालीन सदस्य सक्रिय हो सकता है। ऐसे पूर्णकालीन नवयान धम्म-कार्यकर्ताओं की मदद से धम्म के छोटे छोटे कामों को सब लोग मिल जुलकर लोकतांत्रिक तरिके से करते रहने की मानसिकता जैसे जैसे विकसित होगी तो समाज की ताकत अपने आप बढने लगेगी और दलित-शोषित समाज नेताओं के बिना भी लोकतांत्रिक तरिकों पर अमल करते हुए अपने कदमों पर खुद ब खुद खडा होने लगेगा।

**4**) तब धीरे धीरे इन कामों में हिस्सा लेने के लिये भीमयान बौध्द धम्म से प्रेरित भिख्खु भी हिम्मत कर के आगे आने लगेंगे। लेकिन सबसे पहले लोगों का आगे आना अनिवार्य है तभी धम्म जनता के नियंत्रण में रहेगा न कि पूजारियों के। क्योंकि डॉ. अम्बेडकर ने धर्म और भिख्खुओं को समाज के नियंत्रण में रखने को कहा है। **Religion and priest be brought under proper control** (**Vol. 17-II, p. 3**)

-- शोषित समाज जागरुकता मुहिम !